नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

# नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 037
दि. 09.11.2025,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com


# सोना, हीरा, महंगी संपत्तियां और मुंबई के फ्लैट्स नीलामी के लिए तैयार: मेहुल चोकसी और नीरव मोदी की दौलत पर सरकार की नज़र

**(जीएनएस)।** मुंबई। पंजाब नेशनल बैंक घोटाले के आरोपी नीरव मोदी और उसके मामा मेहुल चोकसी की संपत्तियों पर अब सरकार की अंतिम कार्रवाई शुरू हो चुकी है। मुंबई की विशेष पीएमएलए अदालत ने मेहुल चोकसी की कंपनी गीतांजलि जेम्स लिमिटेड (Gitanjali Gems Ltd.) की करीब 13 संपत्तियों की नीलामी की अनुमति दे दी है। अदालत ने साफ कहा है कि नीलामी से प्राप्त रकम अदालत के नाम पर सावधि जमा (Fixed Deposit) में रखी जाएगी ताकि पीड़ित बैंकों और निवेशकों को उसका लाभ मिल सके।

यह फैसला उस समय आया है जब भारत लंबे समय से इन दोनों भगोड़ों की संपत्तियों को जब्त कर धन की वसूली में लगा हुआ है। नीरव मोदी और मेहुल चोकसी दोनों पर अरबों रुपये के बैंक घोटाले का आरोप है, जिसने भारतीय बैंकिंग सेक्टर को हिला कर रख दिया था। अब अदालत के आदेश के बाद परिसमापक (Liquidator) इन संपत्तियों का मूल्यांकन और नीलामी शुरू करेगा। इसमें मुंबई, जयपुर और गोरेगांव की कई कीमती संपत्तियां शामिल हैं — जिनमें फ्लैट्स, डायमंड ट्रेडिंग ऑफिस, औद्योगिक प्लांट्स, गाड़ियों की पार्किंग, और यहां तक कि चांदी और अर्ध-कीमती पत्थरों की खेप भी शामिल है।

**नीलामी में शामिल होंगी ये संपत्तियां**

मुंबई के बोरीवली इलाके में चार फ्लैट्स जिनकी कीमत करीब 2.6 करोड़ रुपये प्रति फ्लैट बताई गई है, बीकेसी के भारत डायमंड बोर्स में एक वाणिज्यिक इकाई, 14 पार्किंग स्पेस जिनका कुल मूल्य करीब 19.7 करोड़ रुपये है, गोरेगांव (पूर्व) के छह औद्योगिक परिसरों की कीमत करीब 18.7 करोड़ रुपये आंकी गई है, जबकि जयपुर के एसईजेड क्षेत्र में स्थित चोकसी

की कंपनी के पास चांदी की ईंटें, अर्ध-कीमती पत्थर और मशीनें भी हैं जिनकी कीमत लगभग 90 हजार रुपये बताई गई है।

इन सभी संपत्तियों का मूल्यांकन 2018 के आंकड़ों के अनुसार किया गया था, और अब अदालत ने परिसमापक को नए सिरे से मूल्यांकन और नीलामी की प्रक्रिया शुरू करने का आदेश दिया है। अदालत ने कहा कि अगर इन संपत्तियों को लंबे समय तक निष्क्रिय छोड़ा गया तो इनकी कीमत में भारी गिरावट आ सकती है, इसलिए इन्हें तत्काल निपटाया जाना जरूरी है।

**कोर्ट का आदेश और प्रक्रिया**

विशेष न्यायाधीश ए.वी. गुजराती ने अपने आदेश में कहा कि परिसमापक को मूल्यांकन और नीलामी की पूरी प्रक्रिया कानून के तहत पूरी करनी होगी। नीलामी से जो भी रकम प्राप्त होगी, उसे आईसीआईसीआई बैंक में जमा किया जाएगा, जो इस घोटाले से जुड़े कंसोर्टियम बैंकों का प्रमुख बैंक है। अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि राशि को सावधि जमा के रूप में अदालत के नाम पर रखा जाएगा ताकि भविष्य में यह रकम पीड़ित बैंकों और निवेशकों को लौटाई जा सके।

यह मामला पीएमएलए (Prevention of Money Laundering Act) के तहत चल रहा है और प्रवर्तन निदेशालय (ED) भी इसमें सहयोग कर रहा है। ईडी ने अदालत में कहा कि परिसमापक की याचिका न्याय के हित में है और इस पर कोई आपत्ति नहीं है।

**चोकसी और नीरव मोदी की वर्तमान स्थिति**

नीरव मोदी इस समय ब्रिटेन की जेल में बंद है और उसके भारत प्रत्यर्पण की प्रक्रिया जारी है। वहीं, उसका मामा मेहुल चोकसी बेल्जियम में हिरासत में है। दोनों पर भारत में करीब 14,000 करोड़ रुपये के पीएनबी घोटाले का आरोप है, जिसमें उन्होंने कई शेल कंपनियों और फर्जी लेटर ऑफ अंडरटेकिंग (LoUs) के जरिए बैंकों से पैसे हड़प लिए थे।

भारतीय एजेंसियां बीते वर्षों में इन दोनों की दर्जनों संपत्तियां पहले ही जब्त कर चुकी हैं। अब यह नीलामी उन बैंकों और निवेशकों के लिए उम्मीद की किरण बन सकती है जिनके पैसे इस घोटाले में फंसे हुए हैं।

**लंबी कानूनी जंग का निर्णायक मोड़**

इस नीलामी से संकेत मिलता है कि केंद्र सरकार और न्यायपालिका अब इन भगोड़ों की संपत्ति को पूरी तरह निपटाने की दिशा में निर्णायक कदम उठा रही है। अदालत के आदेश से यह भी स्पष्ट होता है कि अब भ्रष्टाचार और वित्तीय अपराधों में लिप्त उद्योगपतियों के खिलाफ कार्रवाई में कोई ढिलाई नहीं बरती जाएगी।

इस पूरे प्रकरण ने एक बार फिर उस सच्चाई को उजागर कर दिया है कि चाहे अपराध कितना भी बड़ा क्यों न हो, न्याय की प्रक्रिया भले धीमी हो लेकिन अंततः हर दोषी को कानून के शिकंजे में आना ही पड़ता है। मेहुल चोकसी और नीरव मोदी के सोने, हीरे और आलीशान संपत्तियों की यह नीलामी उसी कहानी का अगला अध्याय है।

## बलोचिस्तान में अमेरिकी हथियारों की गूंज: बीएलए के कब्जे में आए घातक हथियारों से खुला नया रहस्य, उठे कई सवाल

**(जीएनएस)।** बलोचिस्तान की जमीं एक बार फिर गोलियों की आवाज़ों से दहल उठी है, लेकिन इस बार यह संघर्ष केवल विद्रोहियों और पाकिस्तानी सेना के बीच नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय हथियारों की काली छाया के इर्द-गिर्द घूमता दिखाई दे रहा है। कलात के मोरगांड और खेसर इलाकों में 30 अक्तूबर को हुए हमले के बाद बलोच लिबरेशन आर्मी (बीएलए) के हाथ ऐसे हथियार लगे हैं जिन्होंने पूरे क्षेत्र में हलचल मचा दी है। इन हथियारों पर अमेरिकी-शैली की मार्किंग और विनिर्माण संकेत मिलने से यह संदेह गहराया है कि अफगानिस्तान से छोड़े गए या गुप्त रास्तों से आए अमेरिकी हथियार अब पाकिस्तानी सेना और उसके विशेष बलों तक पहुँच चुके हैं। बीएलए के लड़ाकों ने उस मुठभेड़ के दौरान कई एसएसजी कमांडो को मार गिराने का दावा किया और मृत सैनिकों के हथियार अपने कब्जे में ले लिए। बाद में जब उन हथियारों का निरीक्षण हुआ, तो यह देखकर जांचकर्ताओं के भी होश उड़ गए कि उनमें एम4 कार्बाइन, ट्राइजिकॉन एसीओजी स्कोप, कोल्ट 1911 मैगज़ीन, एफएन-एम16 बैरल और जर्मन निर्मित हेकलर एंड कोच एचके 23A1 जैसी

अत्याधुनिक मशीनगनें शामिल थीं। इनमें से अधिकांश उपकरण अमेरिकी शैली के हैं — यानी वे या तो अमेरिकी निर्माण के हैं, या उन्हीं की तकनीक और डिजाइन से बने हैं।

स्थानीय शोध संगठन बलोचिस्तान फैक्ट्स और कुछ पाकिस्तानी मीडिया रिपोर्टों के अनुसार यह संकेत स्पष्ट हैं कि अफगानिस्तान से छोड़े गए अमेरिकी हथियार अब पाकिस्तान में भी सक्रिय रूप से इस्तेमाल हो रहे हैं। इस खुलासे ने कई स्तरों पर सवाल खड़े कर दिए हैं — क्या यह व्यापार अनजाने में हुआ, या इसके पीछे कोई गुप्त सैन्य गठजोड़ काम कर रहा है?

कई विश्लेषकों का मानना है कि 2021 में अमेरिकी सेना के अफगानिस्तान से अचानक हटने के बाद वहाँ छोड़े गए अरबों डॉलर मूल्य के हथियारों का एक बड़ा हिस्सा काले बाजार में पहुँच गया था। अब वही हथियार अफगान सीमा से होकर पाकिस्तान के विद्रोही और सैन्य समूहों के पास पहुँच रहे हैं। रिपोर्टों के मुताबिक, पाकिस्तान के पश्चिमी क्षेत्रों में कई ऐसे बाजार हैं जहाँ ये हथियार खुलेआम खरीदे-बेचे जाते हैं। तोरखम, चमन, गुलाम खान और नवा दर्रे जैसे सीमा मार्ग इस अवैध व्यापार के प्रमुख रास्ते माने जाते हैं।

लेकिन केवल यही नहीं — कुछ हथियार ऐसे भी हैं जो स्थानीय कारीगरों द्वारा अमेरिकी डिजाइन की नकल पर बनाए जाते हैं। इन्हें स्थानीय भाषा में 'लाहोरी' कहा जाता है। ये हथियार पुराने सैन्य ठिकानों और छावनी इलाकों में बने अस्थायी कारखानों में तैयार किए जाते हैं। इनकी गुणवत्ता इतनी उच्च होती है कि इन्हें देखकर असली और नकली में फर्क कर पाना कठिन होता है। बीएलए के हालिया हमले में भी ऐसे ही 'लाहोरी' संस्करणों के प्रयोग की आशंका जताई जा रही है।

पिछले वर्ष काबुल से पाकिस्तान की ओर आ रहे एक ट्रक से भी एम4ए1 कार्बाइन और ग्लॉक 9mm मैगज़ीन बरामद हुई थीं। उस समय भी यह सवाल उठा था कि आखिर इतनी मात्रा में आधुनिक हथियार सीमाओं को पार करके किसकी निगरानी में अंदर पहुँच रहे हैं? अब बलोचिस्तान के ताजा घटनाक्रम ने उस बहस को फिर से जीवित कर दिया है।

रिपोर्टें यह भी संकेत देती हैं कि पाकिस्तानी सेना की कुछ विशेष इकाइयों — विशेषकर एसएसजी (Special Services Group) — को इन अमेरिकी-शैली के हथियारों से लैस किया जा रहा है ताकि बलोच विद्रोह को कुचला जा सके। यदि यह सच है, तो यह न केवल क्षेत्रीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी गंभीर चिंता का विषय बन सकता है। क्योंकि यह सवाल उठता है कि अफगानिस्तान में छोड़े गए अमेरिकी हथियार आखिर किस रास्ते से पाकिस्तानी सैन्य ढांचे तक पहुँचे?

पाकिस्तानी सरकार की ओर से अभी तक इस पर कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं हुआ है। रक्षा मंत्रालय ने केवल इतना कहा है कि "जांच जारी है और प्राप्त हथियारों की उत्पत्ति का सत्यापन किया जा रहा है।" परंतु विपक्षी दलों और मानवाधिकार संगठनों ने इसे पाकिस्तान की 'गहरी दोहरी नीति' करार देते हुए कहा है कि जो हथियार कभी आतंकवाद से लड़ने के लिए बनाए गए थे, वे अब आंतरिक विद्रोहों को दबाने के लिए इस्तेमाल किए जा रहे हैं।

## तेहरान पर सूखे का संकट: दो हफ्ते का पानी बचा, राष्ट्रपति बोले– हालात बिगड़े तो राजधानी खाली करनी पड़ सकती है

**(जीएनएस)।** ईरान की राजधानी तेहरान, जो कभी सभ्यता, संस्कृति और प्रगति का प्रतीक मानी जाती थी, आज भीषण जल संकट के अंधेरे में डूबती जा रही है। आसमान महीनों से सूखा पड़ा है, बादल आते हैं पर बरसते नहीं, और ज़मीन की नमी धीरे-धीरे गायब हो रही है। कभी जो नदियाँ शहर की जीवनरेखा थीं, वे अब सूखी दरारों में बदल चुकी हैं। शहर के बाँध खाली हैं, जलाशय अपने इतिहास के सबसे निचले स्तर पर पहुँच चुके हैं, और अब तेहरान के पास केवल दो हफ्ते का पानी बचा है।

राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने गुरुवार को पश्चिमी शहर सनंदाज की यात्रा के दौरान स्थिति की गंभीरता पर चेतावनी देते हुए कहा कि यदि जल्द बारिश नहीं हुई, तो राजधानी में पानी की भारी कमी होगी और सरकार को शहर को खाली कराना पड़ सकता है। उनके शब्दों में चिंता और विवशता दोनों झलक रही थीं। उन्होंने कहा, "हम आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक संकटों से जूझ रहे हैं, लेकिन पानी की कमी ने हमारे अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगा दिया है। यदि हालात नहीं सुधरे, तो तेहरान को खाली करना 'अवश्यंभावी निर्णय' बन सकता है।"

तेहरान जल प्राधिकरण के प्रमुख बेहज़ाद पारसा ने बताया कि यदि मौसम शुष्क रहा,

तो बाँधों में शेष जल केवल दो सप्ताह तक ही राजधानी की आवश्यकताओं को पूरा कर पाएगा। ईरान सरकार ने नागरिकों से पानी के विवेकपूर्ण उपयोग की अपील की है और कहा है कि हर बूंद अब जीवन जितनी कीमती हो गई है।

तेहरान की जल आपूर्ति पाँच प्रमुख बाँधों — लार, ममलू, अमीर कबीर, तालेघन और लातियन — पर निर्भर करती है। इनमें अमीर कबीर बाँध सबसे बड़ा है, लेकिन उसका जलस्तर अब सौ वर्षों के न्यूनतम स्तर पर पहुँच गया है। विशेषज्ञों का कहना है कि जलवायु परिवर्तन, अनियंत्रित शहरीकरण, बढ़ती जनसंख्या और जल प्रबंधन में लापरवाही ने इस संकट को जन्म दिया है।

पिछले कुछ वर्षों में ईरान में वर्षा में लगभग 40 प्रतिशत की कमी आई है। तापमान लगातार बढ़ने से जलाशयों में वाष्पीकरण की दर दोगुनी हो गई है। दूसरी ओर, भूजल के अत्यधिक दोहन ने ज़मीन को खोखला कर दिया है, जिससे कई क्षेत्रों में भूमि धंसाव (land subsidence) की समस्या बढ़ रही है। कृषि क्षेत्रों में सिंचाई के लिए अत्यधिक पानी खींचे जाने से भी शहर के जल संसाधन पर भारी दबाव पड़ा है।

तेहरान में आज स्थिति यह है कि दिन में नलों से पानी केवल कुछ घंटों के लिए ही आता है। कई इलाकों में पानी की सप्लाई रोक दी गई है। लोग बाल्टियों और बोतलों में पानी भरकर जमा कर रहे हैं। टैंकरों के पीछे लंबी कतारें लग रही हैं, और कुछ स्थानों पर लोगों के बीच पानी को लेकर झगड़े तक हो रहे हैं। अस्पतालों और स्कूलों में भी पानी की कमी ने कामकाज को प्रभावित किया है।

राष्ट्रपति पेजेशकियन ने कहा, "हमें पानी और ऊर्जा के उपयोग में तत्काल सुधार लाने की आवश्यकता है। यह केवल एक प्रशासनिक मुद्दा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आपातस्थिति है। हर नागरिक को यह समझना होगा कि पानी की हर बूंद अब राष्ट्र की संपत्ति है।" उन्होंने संकेत दिया कि यदि अगले कुछ दिनों में हालात नहीं सुधरे, तो सरकार राजधानी में जल वितरण को सीमित करने के साथ-साथ आबादी के अस्थायी पुनर्वास की योजना भी तैयार करेगी।

विशेषज्ञों का कहना है कि ईरान का यह संकट केवल प्राकृतिक नहीं, बल्कि पर्यावरणीय कुप्रबंधन का परिणाम है। उन्होंने चेतावनी दी है कि यदि देश ने जल पुनर्चक्रण, वर्षा जल संचयन और जल संरक्षण की ठोस योजनाएं नहीं बनाईं, तो आने वाले वर्षों में देश के कई बड़े शहर 'अवासयोग्य' हो सकते हैं।

तेहरान के कई निवासी अब अपने शहर के भविष्य को लेकर भयभीत हैं। 90 लाख की आबादी वाला यह महानगर यदि सच में पानी से खाली हो गया, तो यह आधुनिक इतिहास का सबसे बड़ा पर्यावरणीय विस्थापन हो सकता है। राष्ट्रपति ने अपने भाषण में कहा, "यह संकट हमें याद दिलाता है कि हमने प्रकृति के साथ कितना अन्याय किया है। हमने नदियों को बाँधों में बाँध दिया, जंगलों को काट दिया, और अब धरती हमसे उसका प्रतिशोध ले रही है। हमें अपने तरीकों को बदलना होगा, वरना आने वाली पीढ़ियाँ हमसे यह प्रश्न पूछेंगी कि जब चेतावनी दी गई थी, तब हमने कुछ क्यों नहीं किया।"

तेहरान की सड़कों पर अब लोग जल के लिए भटकते हैं, और आसमान की ओर टकटकी लगाकर बादलों का इंतज़ार करते हैं। वहाँ के बच्चे स्कूल की प्रार्थना में अब यह पंक्ति जोड़ चुके हैं — "हे प्रभु, वर्षा बरसा दो, ताकि हमारी धरती फिर से जी उठे।"

## न्याय हर नागरिक का अधिकार मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई

**(जीएनएस)।** नई दिल्ली। भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) बीआर गवई ने शनिवार को न्याय की सार्वभौमिकता पर जोर देते हुए कहा कि न्याय कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों का उपहार नहीं, बल्कि हर नागरिक का मौलिक अधिकार है। उन्होंने कहा कि न्यायपालिका और अधिवक्ताओं की सबसे बड़ी जिम्मेदारी यह सुनिश्चित करना है कि न्याय का प्रकाश समाज के उस अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे, जो आज भी व्यवस्था की परछाइयों में खड़ा है। सुप्रीम कोर्ट परिसर में "कानूनी सहायता वितरण तंत्र को मजबूत करने" पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर संबोधित करते हुए जस्टिस गवई ने कहा कि भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में न्याय केवल अदालतों की दीवारों तक सीमित नहीं रह सकता। इसे समाज के हर कोने में फैलाना न्यायिक व्यवस्था का नैतिक दायित्व है। उन्होंने कहा, "कानूनी सेवा आंदोलन का असली पुरस्कार रिपोर्टों या आंकड़ों में नहीं, बल्कि उन नागरिकों की आंखों में है जिनके जीवन में न्याय की उम्मीद फिर से जगी है।"

सीजेआई गवई ने यह भी कहा कि कानूनी सहायता के माध्यम से समाज के वंचित और कमजोर वर्गों को सशक्त बनाना, न्यायपालिका की आत्मा को जीवंत बनाए रखता है। उन्होंने कहा कि न्याय तब ही सार्थक है जब कोई भी व्यक्ति, चाहे उसकी सामाजिक या आर्थिक स्थिति कैसी भी हो, अपने अधिकारों की रक्षा के लिए अदालतों तक पहुंच सके। उन्होंने आगे कहा कि न्यायपालिका, वकीलों और विधिक सेवाओं से जुड़ी संस्थाओं को एक साथ मिलकर ऐसा ढांचा तैयार करना चाहिए, जिससे गरीब और हाशिए पर खड़े लोगों को न केवल न्याय की जानकारी मिले, बल्कि वे उसका लाभ भी वास्तविक रूप से उठा सकें। उन्होंने कहा कि "न्याय का मापदंड केवल फैसलों से नहीं, बल्कि इस बात से तय होता है कि समाज के सबसे कमजोर वर्ग तक न्याय पहुंचा या नहीं।"

कार्यक्रम में सुप्रीम कोर्ट के कई वरिष्ठ न्यायाधीशों, राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (NALSA) के पदाधिकारियों और देशभर से आए विधिक सेवा प्राधिकरणों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। जस्टिस गवई के इस संबोधन को न्यायपालिका के मानवीय और संवेदनशील दृष्टिकोण का प्रतीक माना जा रहा है, जो यह याद दिलाता है कि न्याय केवल अदालतों का काम नहीं, बल्कि समाज की आत्मा का प्रतिबिंब है।

## कुपवाड़ा में घुसपैठ की कोशिश नाकाम: सुरक्षाबलों ने दो आतंकियों को किया ढेर, सीमा पर बढ़ी सतर्कता

**(जीएनएस)।** कश्मीर की सीमाओं पर एक बार फिर से आतंकियों की नापाक साजिश को भारतीय जवानों ने नाकाम कर दिया। कुपवाड़ा जिले के केरन सेक्टर में सीमा पार से घुसपैठ की कोशिश कर रहे दो आतंकवादियों को सुरक्षाबलों ने शनिवार तड़के मार गिराया। यह कार्रवाई भारतीय सेना की सतर्क निगरानी और त्वरित प्रतिक्रिया का नतीजा है, जिसने एक और संभावित आतंकी हमले को समय रहते रोक दिया।

सेना के अधिकारियों ने बताया कि ऑपरेशन उस समय शुरू किया गया जब खुफिया एजेंसियों से यह विशिष्ट जानकारी मिली कि नियंत्रण रेखा के पार से कुछ आतंकवादी केरन सेक्टर की ओर घुसपैठ की तैयारी में हैं। इस सूचना के आधार पर सेना और अन्य सुरक्षा एजेंसियों ने संयुक्त अभियान चलाया। रात के अंधेरे में जवानों ने संदिग्ध गतिविधि देखी, जिसके बाद घुसपैठियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई में दोनों आतंकवादी मारे गए। भारतीय सेना की चिनार कॉर्प्स ने अपने आधिकारिक एक्स पोस्ट में लिखा — "केरन सेक्टर में घुसपैठ की कोशिश नाकाम। सुरक्षाबलों ने दो आतंकवादियों को मार गिराया। इलाके में तलाशी अभियान जारी है।" सेना ने यह भी बताया कि संभवतः आतंकियों का समूह नियंत्रण रेखा के उस पार से पाकिस्तान-प्रायोजित नेटवर्क के माध्यम से भेजा गया था।

सूत्रों के अनुसार, आतंकियों के पास से आधुनिक हथियार, गोला-बारूद और संचार उपकरण बरामद हुए हैं। प्रारंभिक जांच में यह भी संभावना जताई जा रही है कि इन आतंकियों का संबंध किसी सक्रिय आतंकी संगठन जैसे लश्कर-ए-तैयबा या जैश-ए-मोहम्मद से हो सकता है, जो लंबे समय से उत्तरी कश्मीर के इस क्षेत्र में घुसपैठ की कोशिशें करते रहे हैं।

सेना के अधिकारियों ने बताया कि अभियान अभी भी जारी है और पूरे इलाके में सघन तलाशी ली जा रही है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई अन्य घुसपैठिया छिपा न हो। केरन, माछिल और तंगधार सेक्टर लंबे समय से आतंकियों की पारंपरिक घुसपैठ की राह माने जाते हैं, जहाँ नियंत्रण रेखा ऊँचे पहाड़ी इलाकों से होकर गुजरती है। सर्दी की शुरुआत से पहले अक्सर घुसपैठ की कोशिशें तेज हो जाती हैं क्योंकि बर्फबारी के बाद इन रास्तों पर आवाजाही लगभग असंभव हो जाती है।

स्थानीय सूत्रों के अनुसार, हाल के हफ्तों में नियंत्रण रेखा के पार से गतिविधियाँ बढ़ी हैं। खुफिया एजेंसियों का मानना है कि पाकिस्तान स्थित आतंकी गिरोह सर्दियों से पहले अधिक से अधिक आतंकियों को घाटी में घुसाने की कोशिश कर रहे हैं ताकि आगामी महीनों में किसी बड़े आतंकी हमले को अंजाम दिया जा सके।

सेना के प्रवक्ता ने कहा कि देश की सीमाएँ पूरी तरह सुरक्षित हैं और किसी भी कीमत पर घुसपैठ की अनुमति नहीं दी जाएगी। उन्होंने यह भी बताया कि इस साल अब तक दर्जनों घुसपैठ की कोशिशों को नाकाम किया जा चुका है और कई आतंकियों को सीमा पार करते समय ही मार गिराया गया है।

कुपवाड़ा का यह ताज़ा ऑपरेशन भारतीय सेना की सतर्कता, रणनीति और वीरता का उदाहरण है। इन जवानों की दृढ़ता के कारण न केवल एक संभावित आतंकी साजिश विफल हुई, बल्कि सीमा सुरक्षा को और मज़बूती भी मिली है। फिलहाल, क्षेत्र में तलाशी जारी है और सेना ने कहा है कि जब तक हर संदिग्ध को ढूंढ नहीं लिया जाता, तब तक अभियान नहीं रुकेगा।

कश्मीर के पहाड़ी इलाकों में बर्फ गिरने से पहले यह कार्रवाई इस बात का संकेत भी है कि आतंकवाद के खिलाफ भारतीय सुरक्षा बल किसी भी परिस्थिति में पीछे हटने वाले नहीं हैं — चाहे चुनौती सीमा पार से आए या भीतर से।

## संपादकीय

# सेहत-समृद्धि लील रहे हैं मौसमी बदलाव

पूरी दुनिया में जलवायु परिवर्तन का मानवीय जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का शोर तो लंबे समय से सुनाई दे रहा है, लेकिन इसकी घातकता का अंदाजा कुछ समय पहले प्रकाशित प्रमाणिक वैश्विक सर्वेक्षण से सामने आया है। सर्वे बताता है कि भारत में पिछले साल बीस दिन लू का सामना करना पड़ा। इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन कारकों से अधिक गर्म हवाएं चलीं। यह भी कि वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के चलते 247 अरब घंटों का नुकसान हुआ, जिसके चलते श्रम क्षमता में कमी आने से 194 अरब डॉलर का नुकसान देखा गया। 'द लांसेट काउंटडाउन ऑन हेल्थ एंड क्लाइमेट चेंज 2025' रिपोर्ट के अनुसार पिछले साल जलवायु परिवर्तन के कारकों से कृषि क्षेत्र में 66 फीसदी और निर्माण क्षेत्र में बीस फीसदी का नुकसान हुआ। यह रिपोर्ट इशारा करती है कि अत्यधिक गर्मी के कारण श्रम क्षमता में कमी के कारण 194 अरब डॉलर की संभावित आय का नुकसान हुआ। उल्लेखनीय है कि यह रिपोर्ट विश्व के 71 शैक्षणिक संस्थानों और संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों के 128 अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों ने तैयार की, जिसका कुशल नेतृत्व यूनिवर्सिटी कालेज लंदन ने किया। इस रिपोर्ट में जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य के बीच संबंधों का अब तक सबसे व्यापक आकलन किया गया है। रिपोर्ट बताती है कि जीवाश्म ईंधनों पर अत्यधिक निर्भरता और जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन की विफलता से लाखों लोगों की जिंदगियां, स्वास्थ्य और आजीविका खतरे में हैं। रिपोर्ट के अनुसार स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को मापने वाले 20 में से बारह संकेतक अब तक के सबसे उच्चतम स्तर तक जा पहुंचे हैं। रिपोर्ट बताती है कि साल 2020 से 2024 के बीच भारत में औसतन हर साल दस हजार मौतें जंगल की आग से उत्पन्न पीएम 2.5 प्रदूषण से जुड़ी थीं। चिंता की बात यह है कि यह वृद्धि 2003 से 2012 की तुलना में 28 फीसदी अधिक है, जो हमारी गंभीर चिंता का विषय होना चाहिए।

विडंबना यह है कि 'द लांसेट' की रिपोर्ट में सामने आए गंभीर तथ्यों के बावजूद अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस संकट से मिलकर जूझने की ईमानदार कोशिश होती नजर नहीं आती। यह निर्विवाद तथ्य है कि दुनिया के विकसित देश अपनी जिम्मेदारी से लगातार बचने के प्रयास कर रहे हैं। खासकर हाल के वर्षों में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जलवायु परिवर्तन को लेकर जो गैरजिम्मेदाराना रवैया अख्तियार किया है, उससे नहीं लगता कि वैश्विक स्तर पर इस संकट से निपटने की कोई गंभीर साझा पहल निकट भविष्य में सिरे चढ़ेगी। विकसित देश इस दिशा में मानक पेरिस समझौते की संस्तुतियों को नजरअंदाज करते नजर आते हैं। वे विकास के तमाम संसाधनों का निर्मम दोहन करने के बाद अपनी गरीब आबादी को को गरीबी के दलदल से बाहर निकालने में जुटे विकसित देशों पर जलवायु परिवर्तन से बचाव के उपायों को लागू करने के लिये लगातार दबाव बना रहे हैं। 'द लांसेट काउंटडाउन ऑन हेल्थ एंड क्लाइमेट चेंज 2025' रिपोर्ट के अनुसार, मानवजनित पीएम-2.5 प्रदूषण भारत में 2022 के दौरान 17 लाख मौतों के लिए जिम्मेदार था। इसमें कोयला और तरल गैस जैसे जीवाश्म ईंधनों से होने वाले उत्सर्जन का 44 फीसदी योगदान था। इसके साथ ही सड़क परिवहन में पेट्रोल के उपयोग से पैदा प्रदूषण से करीब 2.69 लाख मौतें हुईं। रिपोर्ट में दर्शाई गई सबसे बड़ी चिंता श्रम के घंटों के नुकसान और कृषि क्षेत्र में 66 फीसदी नुकसान का होना है। यह संकट जहां बड़े विस्थापन को जन्म दे सकता है, वहीं हमारी खाद्य शृंखला संकटग्रस्त हो सकती है, जिसके लिए देश में जलवायु परिवर्तन के अनुकूल फसलों की किस्मों की खोज जरूरी हो जाती है। यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो फसलों पर जलवायु परिवर्तन प्रभावों को कम किया जा सकता है। दुनिया के सबसे बड़ी आबादी वाले देश के सामने यह मुश्किल सबसे बड़ी है। वहीं भारत सरकार और किसानों के सामने यह वर्तमान की सबसे बड़ी चुनौती है। 'द लांसेट काउंटडाउन ऑन हेल्थ एंड क्लाइमेट चेंज 2025' रिपोर्ट में उजागर तथ्य हमारी आंख खोलने वाले व सचेतक हैं।

# पूरे विश्व में भारतीय आर्थिक दर्शन को लागू करने का समय अब आ गया है

> भारतीय आर्थिक दर्शन का वर्णन चारों वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद), 18 पुराण, उपनिषद, विदुरनीति, कौटिल्य अर्थशास्त्र, थिरुवल्लुवर, मनुस्मृति, शुक्रनीति, डॉक्टर एम जी बोकारे द्वारा लिखित हिंदू अर्थशास्त्र, श्री दत्तोपंत ठेंगढ़ी द्वारा रचित पुस्तक "थर्ड वे" आदि शास्त्रों एवं धार्मिक पुस्तकों में मिलता है।

आज, वैश्विक स्तर पर कई देशों में विभिन्न प्रकार की आर्थिक समस्याएं दिखाई दे रही हैं, जिनका हल ये देश निकाल नहीं पा रहे हैं। आज विश्व के सबसे अधिक विकसित देश अमेरिका में भी मुद्रा स्फीति, बेरोजगारी, ऋण की राशि का असहनीय स्तर पर पहुंच जाना, विदेशी व्यापार में लगातार बढ़ता घाटा, नागरिकों के बीच आय की असमानता का लगातार बढ़ते जाना (अमीर नागरिक और अधिक अमीर हो रहे हैं एवं गरीब नागरिक और अधिक गरीब हो रहे हैं), बजट में वित्तीय घाटे का लगातार बढ़ते जाना एवं इन आर्थिक समस्याओं के चलते देश में सामाजिक ताने बाने का छिन्न भिन्न होना, जैसे, जेलों की पूरी क्षमता का उपयोग और इन जेलों में कैदियों के रखने लायक जगह की कमी होना, तलाक की दर में बेतहाशा वृद्धि होना, मकान की अनुपलब्धि के चलते बुजुर्गों का खुले में पार्कों में रहने को मजबूर होना, आदि ऐसी कई प्रकार की आर्थिक एवं सामाजिक समस्याएं दिखाई दे रही हैं। उक्त समस्याओं के चलते ही अब अमेरिकी अर्थशास्त्रियों द्वारा खुले रूप से कहा जाने लगा है कि साम्यवाद पर आधारित अर्थव्यवस्थाओं के असफल होने के उपरांत अब पूंजीवाद पर आधारित अर्थव्यवस्थाओं के भी असफल होने का खतरा मंडराने लगा है, और यह अब कुछ वर्षों की ही बात शेष है। उक्त समस्याओं के हल हेतु अब पूरा विश्व ही भारत की ओर आशाभारी नजरों से देख रहा है और तीसरे आर्थिक मॉडल की तलाश कर रहा है। भारतीय आर्थिक दर्शन का वर्णन चारों वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद), 18 पुराण, उपनिषद, विदुरनीति, कौटिल्य अर्थशास्त्र, थिरुवल्लुवर, मनुस्मृति, शुक्रनीति, डॉक्टर एम जी बोकारे द्वारा लिखित हिंदू अर्थशास्त्र, श्री दत्तोपंत ठेंगढ़ी द्वारा रचित पुस्तक "थर्ड वे" आदि शास्त्रों एवं धार्मिक पुस्तकों में मिलता है। इस प्रकार भारतीय आर्थिक दर्शन की जड़ें सनातन हिंदू संस्कृति से जुड़ी हुई हैं। भारतीय आर्थिक दर्शन की नीतियों का अनुपालन करते हुए ही प्राचीन काल में भारत में विभिन्न राजाओं द्वारा अपने अपने राज्यों की अर्थव्यवस्था सफलतापूर्वक चलाई जाती रही है।

भारतीय आर्थिक दर्शन में "विपुलता के सिद्धांत" की व्याख्या मिलती है जिसके अनुसार, बाजार में

वस्तुओं की आपूर्ति सदैव ही मांग से अधिक रहती थी। इस सिद्धांत के चलते चूंकि उत्पादों की बाजार में पर्याप्त आपूर्ति रहती थी अतः वस्तुओं के बाजार भाव में वृद्धि नहीं दिखाई देती थी, अतः भारत में प्राचीनकाल में मुद्रा स्फीति की समस्या सर्वथा, थी ही नहीं। जबकि, आज विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रा स्फीति की समस्या सबसे बड़ी समस्या है जिसका हल निकालने में ये देश सक्षम नहीं दिखाई दे रहे हैं। विपुलता के सिद्धांत के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में ही विभिन्न उत्पादों का उत्पादन किया जाकर स्थानीय हाट बाजार में इन उत्पादों का विक्रय किया जाता था, जिससे स्थानीय स्तर पर ही स्वावलम्बन का भाव जागृत होता था। कुछ इलाकों में 40/50 गांवों के बीच साप्ताहिक हाट की व्यवस्था विकसित की गई थी। इन साप्ताहिक हाटों में लगभग सभी प्रकार के उत्पादों का विक्रय किया जाता था। चूंकि स्थानीय स्तर पर निर्मित विभिन्न उत्पादों की पर्याप्त मात्रा में बाजार में उपलब्धि रहती थी, अतः इन उत्पादों की कीमतें भी अपने आप ही नयंत्रित रहती थीं और इस प्रकार प्राचीन भारत में मुद्रा स्फीति के स्थान पर घटते हुए मूल्य के अर्थशास्त्र का वर्णन मिलता है। पूरे विश्व में, इस संदर्भ में, वर्तमान स्थिति भारतीय आर्थिक दर्शन के ठीक विपरीत दिखाई देती है जो किसी भी स्थिति में उचित नहीं कही जा सकती है। दरअसल, मुद्रा स्फीति का सबसे बुरा असर गरीब वर्ग पर पड़ता है और आज वैश्विक स्तर पर उत्पादन इकाईयां विभिन्न वस्तुओं की बाजार में आपूर्ति को विपरीत रूप नियंत्रित करती हैं ताकि इन उत्पादों की बाजार में कीमत बढ़ सके एवं इन उत्पादन इकाईयों के लाभ में वृद्धि दर्ज हो सके। पूंजीवाद पर आधारित अर्थव्यवस्था में उत्पादन इकाईयों का मुख्य उद्देश्य ही अधिकतम लाभ कमाना होता है और इस मूल्य वृद्धि से समाज के गरीब एवं मध्यम वर्ग पर कितना बोझ बढ़ रहा है, इससे उन्हें कोई मतलब नहीं रहता है। प्राचीन भारत में मुद्रा स्फीति की समस्या इसलिए भी नहीं रहती थी क्योंकि प्राचीनकाल में भारतीय आर्थिक दर्शन के अनुसार "प्रतिस्पर्धा के सिद्धांत" का अनुपालन सुनिश्चित होता था। ग्रामीण क्षेत्रों में लगने वाले हाट बाजार में उत्पादों के विक्रेताओं के बीच में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा रहती थी। उत्पाद बेचने वाले स्थानीय विक्रेताओं की पर्याप्त संख्या रहती थी एवं साथ ही इनके बीच अपने अपने उत्पाद बेचने की प्रतिस्पर्धा रहती थी ताकि अपने अपने उत्पाद शीघ्र ही बेचकर वे अपने अपने ग्रामों में सूरज डूबने के पूर्व वापिस पहुंच सकें। इस प्रकार के कारणों के चलते कई बार तो विक्रेता अपने उत्पादों को सस्ते भाव में बेचना चाहता था अतः बाजार में उत्पादों के मूल्यों में कमी भी दिखाई देती थी। आज, वैश्विक स्तर पर निगमित क्षेत्र में कार्यरत कम्पनियों के बीच आपसी प्रतिस्पर्धा तो एक तरह से दिखाई ही नहीं देती है बल्कि वे आपस में मिलकर उत्पादक संघ (कार्टेल) का निर्माण कर लेती हैं और इन कम्पनियों द्वारा निर्मित उत्पादों के बाजार मूल्यों को अपने पक्ष में नियंत्रित किया जाता हैं ताकि वे इन उत्पादों के व्यापार से अपने लिए अधिकतम लाभ का अर्जन कर सकें। इस पूंजीवादी नीति से इन कम्पनियों की लाभप्रदता में तो वृद्धि होती है परंतु आम नागरिकों की जेब पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है। अतः उक्त पूंजीवादी आर्थिक नीति के चलते आम नागरिकों पर निर्मित होने वाले आर्थिक दबाव को कम करने की दृष्टि से विक्रेताओं द्वारा लाभ अर्जन के संदर्भ में भी भारतीय आर्थिक दर्शन के नियमों का अनुपालन किया जा सकता है।

भारतीय आर्थिक दर्शन के अनुसार, "मूल्य सिद्धांत" के अंतर्गत, विक्रेता द्वारा स्वयं के द्वारा निर्मित वस्तु की उत्पादन लागत पर 5 प्रतिशत की दर से लाभ जोड़कर उस वस्तु का विक्रय मूल्य तय किया जाना चाहिए एवं यदि उस वस्तु का निर्यात किसी अन्य देश को किया जा रहा है तो उस वस्तु के उत्पादन लागत पर 10 प्रतिशत की दर से लाभ जोड़कर उस वस्तु का विक्रय मूल्य तय किया जाना चाहिए। इस नीति के अनुपालन से प्राचीन भारत में विभिन्न उत्पादों के बाजार मूल्य लम्बे समय तक स्थिर रहते थे एवं इनके मूल्यों में वृद्धि लगभग नहीं के बराबर दिखाई देती थी। आज पूंजीवादी नीतियों के अंतर्गत विभिन्न उत्पादों के विक्रय मूल्यों पर किसी भी प्रकार का नियंत्रण नहीं है। विशेष रूप से दवाईयों के मूल्य के सम्बंध में नीति का उल्लेख यहां किया जा सकता है। केन्सर एवं दिल की बीमारी से सम्बंधित दवाईयों के बाजार मूल्य लाखों रुपयों में तय किए जाते हैं क्योंकि इन दवाईयों को बेचने का एकाधिकार "पैटेंट कानून" के अंतर्गत केवल इन दवाईयों का उत्पादन करने वाली कम्पनियों के पास रहता है। केवल लाभ कमाना ही इन कम्पनियों का मुख्य उद्देश्य है, जबकि सनातन हिंदू संस्कृति में किसी अस्वस्थ नागरिक को दवाई उपलब्ध कराने का कार्य सेवा कार्य की श्रेणी में रखा गया है। उक्त वर्णित दवाईयों की बाजार में उपलब्धता बढ़ाकर एवं इन दवाईयों के विक्रय मूल्य को नयंत्रित रखकर कई जीवन बचाए जा सकते हैं। परंतु, पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के अंतर्गत तो लाभ कमाना ही मुख्य उद्देश्य है।

आज विश्व के कई देशों में बेरोजगारी की समस्या विकराल रूप धारण करती हुए दिखाई दे रही है एवं इन देशों के पास बेरोजगारी की समस्या को हल करने का कोई उपाय भी सूझ नहीं रहा है। भारत के प्राचीन ग्रंथो में बेरोजगारी की समस्या के संदर्भ के किसी प्रकार का जिक्र भी नहीं मिलता है। "स्वयं के नियोजन के सिद्धांत" का अनुपालन करते हुए उस समय पर विभिन्न परिवारों द्वारा स्थापित अपने उद्यमों को ही आगे आने वाली पीढ़ी आगे बढ़ाती जाती थी, इससे युवाओं में "नौकरी" करने का प्रचलन भी नहीं था। अपने पारम्परिक व्यवसाय में ही युवा पीढ़ी रत हो जाती थी अतः बेरोजगारी की समस्या भी बिलकुल नहीं पाई जाती थी। आज पूंजीवादी व्यवस्था के अंतर्गत कोरपोरेट जगत की स्थापना के चलते नागरिकों में "नौकरी" का भाव जागृत किया गया है। आज प्रत्येक युवा नौकरी की कतार में लगा हुआ दिखाई देता है, लगभग 30 वर्ष की आयु होते होते जब उसे उसकी चाहत के अनुसार नौकरी नहीं मिल पाती है तो वह अपने जीवन के लिए समझौता कर लेता है और किसी भी संस्थान में किसी भी प्रकार की नौकरी करने को मजबूर हो जाता है। कई इंजीनियर एवं पोस्ट ग्रैजूएट युवा, मजबूरी में आज विभिन्न उत्पादों की डिलीवरी करने एवं टैक्सी चलाने जैसे कार्यों को भी करते हुए दिखाई देते हैं। आज यदि अपने पुश्तैनी व्यवसाय को यह युवा आगे बढ़ा रहे होते तो सम्भवतः उनकी आमदनी भी अधिक होती और उक्त प्रकार के कार्य करने हेतु वे मजबूर भी नहीं होते।

भारत के प्राचीन ग्रंथों में "शून्य ब्याज दर के सिद्धांत" का भी वर्णन मिलता है। राज्यों के पास धन के भंडार भरे रहते थे एवं समाज में यदि किसी नागरिक को अपना व्यवसाय स्थापित करने के लिए धन की आवश्यकता रहती थी तो वह राजा से धन उधार लेकर अपना व्यवसाय स्थापित कर सकता था एवं राजा द्वारा नागरिकों को दी गई उधार की राशि पर किसी प्रकार का ब्याज नहीं लिया जाता था। क्योंकि, यह उस राज्य के राजा का कर्तव्य माना जाता था कि वह अपने राज्य के नागरिकों को उचित मात्रा में व्यवसाय करने के लिए धन उपलब्ध कराए। इस प्रकार, भारत के प्राचीन खंडकाल में ब्याज की दर भी शून्य रहा करती थी। इससे, स्थानीय नागरिक भी अपना व्यवसाय स्थापित करने की ओर प्रेरित होते थे एवं नौकरी करने का चलन नहीं के बराबर रहता था।

## प्रेरणा

# सम्मान का असली मापदंड

नेपोलियन बोनापार्ट यूरोप का महान सम्राट था, जिसकी वीरता, बुद्धिमत्ता और शासनकला के किस्से चारों ओर प्रसिद्ध थे। उसके दरबार में दुनिया भर के बड़े-बड़े विद्वान, सैनिक, वैज्ञानिक और कलाकार आते-जाते रहते थे। हर व्यक्ति चाहता था कि उसे नेपोलियन के समक्ष अपनी कला या ज्ञान प्रदर्शित करने का अवसर मिले।

एक दिन एक प्रसिद्ध चित्रकार, जिसने अपनी कला से फ्रांस का नाम रोशन किया था, नेपोलियन से मिलने आया। परंतु वह चित्रकार बहुत साधारण जीवन जीने वाला व्यक्ति था। वह आलीशान वस्त्रों में नहीं, बल्कि साधारण, धूल-धूसरित कपड़ों में नेपोलियन के दरबार में पहुँचा। उसके कपड़े मैले थे, बाल बिखरे हुए थे, और जूतों पर भी पॉलिश नहीं थी। दरबारियों ने जब उसे देखा, तो वे हँस पड़े और तिरस्कार भरी नज़रों से उसे देखने लगे। किसी ने सोचा भी नहीं कि यह व्यक्ति कोई बड़ा कलाकार या विद्वान हो सकता है।

नेपोलियन, जो बाहरी अनुशासन और राजसी ठाठ-बाट का बहुत ध्यान रखता था, जब उस व्यक्ति से मिला तो उसके वस्त्रों को देखकर मन में उपेक्षा का भाव आ गया। उसने औपचारिकता निभाई, पर उससे कोई विशेष बात नहीं की। चित्रकार को पास बैठने का स्थान नहीं दिया गया, और वह एक कोने में बैठा रहा। कुछ देर बाद नेपोलियन ने उससे पूछा, "तुम कौन हो, और मुझसे मिलने का क्या प्रयोजन है?"

चित्रकार ने विनम्रता से उत्तर दिया, "महाराज,

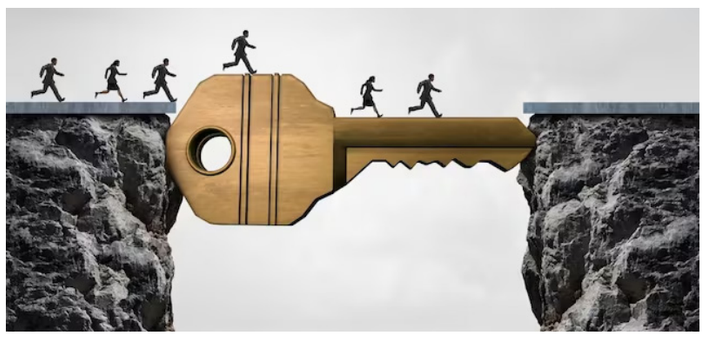

मैं एक चित्रकार हूँ। मेरे चित्रों की प्रदर्शनी हाल ही में पेरिस में लगी थी। मैं आपके दर्शन करने और आपके लिए एक चित्र बनाने की इच्छा से आया हूँ।"

नेपोलियन ने थोड़ा व्यंग्यपूर्ण स्वर में कहा, "तुम्हारे जैसे कपड़े पहने व्यक्ति के चित्र को देखकर कौन प्रभावित होगा? कलाकार को अपनी कला के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व पर भी ध्यान देना चाहिए।"

चित्रकार ने मुस्कराते हुए कहा, "महाराज, वस्त्र तो शरीर की शोभा हैं, पर कला आत्मा की। मैं जो चित्र बनाता हूँ, वह बाहरी वस्त्रों से नहीं, बल्कि भीतर की अनुभूति से बनता है।"

यह सुनते ही दरबार में सन्नाटा छा गया। नेपोलियन कुछ क्षणों के लिए मौन हो गया। उसे यह अहसास हुआ कि उसने केवल बाहरी रूप देखकर एक महान व्यक्ति को कम आंका है। उसने चित्रकार से उसके चित्र देखने का आग्रह किया। चित्रकार ने अपनी कृति का परिचय कराया — चित्रों में भाव, गहराई और जीवन झलकता था। हर एक चित्र में मानो आत्मा बसती थी।

नेपोलियन उन चित्रों को देखकर इतना प्रभावित हुआ कि उसके शब्द जैसे गले में अटक गए। उसने तुरंत सिंहासन से उठकर चित्रकार को अपने समीप बैठाया और उससे विनम्रता से बातचीत की। जब चित्रकार वहाँ से विदा होने लगा, तो नेपोलियन स्वयं उठकर उसे मुख्य द्वार तक छोड़ने गया।

चित्रकार ने विनम्र स्वर में कहा, "महाराज, मैं तो एक साधारण व्यक्ति हूँ। लेकिन आपने सम्राट होते हुए स्वयं मुझे विदा किया, इसका क्या कारण है?"

नेपोलियन मुस्कराया और बोला, "जब तुम मेरे पास आए थे, तब मैं तुम्हें तुम्हारे वस्त्र देखकर परख रहा था। लेकिन जब तुम जा रहे हो, तब मैं तुम्हें तुम्हारे गुणों से पहचान रहा हूँ। आने वाले का सम्मान अक्सर उसके पहनावे से किया जाता है, परंतु जाते वक्त सम्मान उसके कर्म और गुणों से मिलता है।"

चित्रकार ने झुककर प्रणाम किया और चला गया, लेकिन नेपोलियन के शब्द उसके हृदय में अंकित हो गए।

यह घटना हमें यह सिखाती है कि सम्मान का मापदंड कभी भी बाहरी रूप, पद, या संपत्ति नहीं होना चाहिए। सच्चा सम्मान वही है जो किसी के संस्कार, ज्ञान, कर्म और चरित्र के कारण दिया जाए। कपड़े, सोने-चाँदी के आभूषण या ऊँचे पद सब अस्थायी हैं, परंतु मनुष्य के गुण उसे स्थायी प्रतिष्ठा दिलाते हैं।

जैसे फूल अपनी सुगंध से पहचाना जाता है, वैसे ही मनुष्य अपने गुणों से जाना जाता है। जो व्यक्ति केवल दिखावे पर गर्व करता है, उसका सम्मान क्षणिक होता है। लेकिन जो व्यक्ति विनम्र, ज्ञानी और कर्मनिष्ठ होता है, उसका आदर युगों तक बना रहता है।

नेपोलियन और चित्रकार की यह कथा हमें यह याद दिलाती है कि यदि हम किसी का मूल्यांकन करना चाहते हैं, तो उसके वस्त्र या बाहरी रूप को नहीं, बल्कि उसके आचरण और विचारों को देखें — क्योंकि वहीं से मनुष्य की वास्तविक पहचान होती है।

# वंदे मातरम् - सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रथम उद्घोषणा

हमारे देश के इतिहास में ऐसे कई अहम पड़ाव आए, जब गीतों, कलाओं ने अलग-अलग रूपों में लोकभावनाओं को सहेजकर आंदोलन को आकार देने में अहम भूमिका निभाई। चाहे छत्रपति शिवाजी महाराज जी की सेना के युद्धगीत हों, आज़ादी के आंदोलन में सेनानियों के गान या आपातकाल के विरुद्ध युवाओं के सामूहिक गीत, गीतों ने भारतीय समाज को स्वाभिमान की प्रेरणा भी दी और एकजुट भी बनाया। ऐसा ही है भारत का राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्', जिसका इतिहास किसी युद्धभूमि से नहीं,बल्कि एक विद्वान बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय जी के शांत लेकिन अडिग संकल्प से शुरू होता है। सन् 1875 में, जगद्धात्री पूजा (कार्तिक शुक्ल नवमी या अक्षय नवमी) के दिन, उन्होंने उस स्तोत्र की रचना की जो भारत की स्वतंत्रता का शाश्वत गीत बन गया। 'वन्दे मातरम्' केवल भारत का राष्ट्रीय गीत ही नहीं, सिर्फ स्वतंत्रता आन्दोलन का प्राण ही नहीं बल्कि यह बंकिमचन्द्र चटोपाध्याय जी द्वारा 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' की प्रथम उद्घोषणा है। इसने हमें याद दिलाया कि भारत केवल ज़मीन का एक टुकड़ा नहीं, बल्कि एक भू-सांस्कृतिक राष्ट्र है - जिसकी एकता उसकी संस्कृति और सभ्यता से आती है।

जैसा कि महर्षि अरबिंद ने वर्णन किया, बंकिम आधुनिक भारत के एक ऋषि थे, जिन्होंने अपने शब्दों के माध्यम से राष्ट्र की आत्मा को पुनर्जीवित किया। अपने एक पत्र में, बंकिम बाबू ने लिखाः "मुझे कोई आपत्ति नहीं है यदि मेरे सभी कार्य गंगा में बहा दिए जाएँ। यह श्लोक ही अनंत काल तक जीवित रहेगा। यह एक महान गान होगा और लोगों के हृदय को जीत लेगा।" औपनिवेशिक भारत के सबसे अंधकारमय काल में लिखा गया, 'वंदे मातरम्' जागृति का प्रभात-गीत बन गया।

1896 में, रवींद्रनाथ टैगोर जी ने 'वंदे मातरम्' को धुन में पिरोया, जिससे इसे वाणी और अमरता प्राप्त हुई। यह गीत भाषा और क्षेत्र की सीमाओं से आगे बढ़कर पूरे देश में गूंज उठा। तमिलनाडु में सुब्रमण्यम भारती जी ने इसका तमिल अनुवाद किया और पंजाब में क्रांतिकारियों ने इसे गाते हुए ब्रिटिश राज को खुली चुनौती दी। 1905 में, बंग-भंग आंदोलन के दौरान 'वंदेमातरम्' के सार्वजनिक पाठ पर प्रतिबंध लगा दिया था, फिर भी, 14 अप्रैल, 1906 को बारीसाल में, हजारों लोगों ने इस आदेश की अवहेलना की। जब पुलिस ने शांतिपूर्ण सभा पर लाठीचार्ज किया, तो पुरुष और महिलाएँ सड़कों पर 'वंदे मातरम्' का नारा लगाते हुए लहूलुहान हो गए।

वहाँ से, 'वंदे मातरम्' का मंत्र, गदर पार्टी के क्रांतिकारियों के साथ कैलिफ़ोर्निया पहुँच गया, आज़ाद हिंद फ़ौज में गूँजा, जब नेताजी के सैनिक सिंगापुर से मार्च कर रहे थे और 1946 के रॉयल इंडियन नेवी की क्रांति में भी गूँजा, जब भारतीय नाविकों ने ब्रिटिश युद्धपोतों पर तिरंगा फहराया। खुदीराम बोस से लेकर अशफ़ाक़उल्ला ख़ान तक, चंद्रशेखर आजाद से लेकर तिरुपुर कुमारन तक, नारा एक ही था। यह अब सिर्फ़ एक गीत नहीं रहा; यह भारत की सामूहिक आत्मा की आवाज़ बन गया था। महात्मागांधी ने स्वयं स्वीकार किया था, 'वंदे मातरम्' में "सबसे सुस्त रक्त को भी जगाने की जादुई शक्ति" थी। महर्षि अरबिंद जी ने इसीलिए कहा था कि, यह "भारत के पुनर्जन्म का मंत्र" है।

26 अक्टूबर को 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'वंदेमातरम्' गीत के इस इतिहास की देशवासियों को फिर से याद दिलाई और राष्ट्रीय गीत 'वंदेमातरम्' के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 7 नवंबर से भारत सरकार की ओर से अगले एक वर्ष तक अलग-अलग कार्यक्रमों का आयोजन करने का निर्णय लिया। इन आयोजनों के माध्यम से देश भर में 'वंदे मातरम्' का पूर्ण गान होगा, जिससे देश की युवा पीढ़ी 'सांस्कृतिकराष्ट्रवाद' के विचार को आत्मसात कर पाए।

आज जब हम भारत पर्व मना रहे हैं और सरदार पटेल की जयंती पर उन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण कर रहे हैं, तो यह भी याद करते हैं कि कैसे सरदार साहब ने 'एक भारत' का निर्माण कर 'वंदे मातरम्' की भावना को ही मूर्त रूप दिया 'वंदे मातरम्' आज भी विकसित भारत 2047 के हमारे संकल्प में प्रेरणा देर हा है। अब, इस भावना को आत्मनिर्भर और श्रेष्ठ भारत में परिवर्तित करना हमारी ज़िम्मेदारी है।

'वंदेमातरम्' स्वतंत्रता का गीत है, अटूट संकल्प की भावना है, और भारत के जागरण का प्रथम मंत्र है। राष्ट्र की आत्मा से जन्मे शब्द कभी समाप्त नहीं होते, वे सदैव जीवित रहते हैं, पीढ़ियों तक गूंजते रहते हैं। समय आ गया है कि हम अपने इतिहास, अपनी संस्कृति, अपनी मान्यताओं और अपनी परंपराओं को भारतीयता की दृष्टि से देखें।

## अभियान

# श्रीकृष्ण चालीसा का पाठ: जीवन में शांति, समृद्धि और सफलता का दिव्य मार्ग

भगवान श्रीकृष्ण को संसार का पालनकर्ता, लीला पुरुषोत्तम और सच्चिदानंद स्वरूप कहा गया है। वे केवल द्वारका के राजा या कुरुक्षेत्र के सारथी नहीं, बल्कि धर्म, नीति, प्रेम और करुणा के प्रतीक हैं। जब-जब धर्म की रक्षा की आवश्यकता पड़ी, उन्होंने मानव रूप लेकर अधर्म का नाश किया और सत्य का मार्ग दिखाया। श्रीकृष्ण के नाम का स्मरण मात्र ही मन को आनंद और शांति से भर देता है, और जब भक्त भावपूर्वक उनकी चालीसा का पाठ करता है, तो उसका जीवन ईश्वर की कृपा से आलोकित हो उठता है। श्रीकृष्ण चालीसा में कुल 40 छंद हैं, जिनमें भगवान की बाल लीलाओं से लेकर महाभारत के उपदेशों तक का सुंदर चित्रण मिलता है। इसमें वह हर रूप झलकता है जो भक्त के हृदय को भक्ति, करुणा और प्रेम से भर देता है — माखनचोर कान्हा, रासविहारी मुरलीधर, गीता उपदेशक योगेश्वर, और द्रौपदी के रक्षक गोविंद। यह चालीसा केवल एक स्तुति नहीं, बल्कि भक्ति का जीवंत स्रोत है, जो मनुष्य के मन, वाणी और कर्म को दिव्यता से भर देता है।

मान्यता है कि जो व्यक्ति प्रतिदिन स्नान करके पवित्र भाव से श्रीकृष्ण चालीसा का पाठ करता है, उसके जीवन से सभी प्रकार के दुख, भय और क्लेश दूर हो जाते हैं। यह पाठ मन को स्थिर करता है, विचारों को निर्मल बनाता है, और जीवन के हर क्षेत्र में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। श्रीकृष्ण की कृपा से व्यक्ति को यश, प्रतिष्ठा, धन, संतान-सुख, और पारिवारिक शांति की प्राप्ति होती है।

श्रीकृष्ण चालीसा का पाठ करते समय भक्त को हृदय में कान्हा का दिव्य रूप ध्यान में लाना चाहिए — नीले वर्ण का, पीताम्बर धारी, हाथों में बांसुरी लिए हुए, मुरली की मधुर ध्वनि से जग को मोहित करने वाले। जब मन भक्तिभाव में डूब जाता है, तब यह पाठ केवल शब्दों का नहीं, बल्कि आत्मा और परमात्मा के मिलन का माध्यम बन जाता है।

धार्मिक मान्यता यह भी है कि श्रीकृष्ण चालीसा का पाठ न केवल सांसारिक लाभ देता है, बल्कि आत्मिक शांति भी प्रदान करता है। यह मन के विकारों को दूर कर व्यक्ति को करुणा, सत्य और प्रेम के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। जो व्यक्ति रोजाना इस चालीसा का पाठ करता है, वह जीवन की कठिन परिस्थितियों में भी संयम और धैर्य बनाए रखता है, क्योंकि उसके भीतर श्रीकृष्ण की ऊर्जा और मार्गदर्शन विद्यमान रहता है।

कान्हा के नाम में अद्भुत शक्ति है। जब भक्त प्रेमपूर्वक उनका स्मरण करता है, तो वे स्वयं उसके जीवन के रथ के सारथी बन जाते हैं। चाहे वह व्यापार में सफलता की कामना हो, परिवार में शांति की या मन में स्थिरता की — श्रीकृष्ण चालीसा का पाठ हर दिशा में मंगलकारी परिणाम देता है।

जो व्यक्ति भक्ति के साथ इस चालीसा का पाठ करता है, उसके घर में लक्ष्मी का वास होता है, कलह दूर होता है, और वातावरण में मधुरता आ जाती है। जिन दंपत्तियों को संतान सुख की इच्छा होती है, उन्हें यह चालीसा विशेष फल देती है। विद्यार्थी जब इसका नियमित पाठ करते हैं, तो उनका ध्यान, स्मरणशक्ति और आत्मविश्वास बढ़ता है।

अतः कहा गया है कि —

"जहां श्रीकृष्ण का नाम लिया जाता है, वहां स्वयं भाग्य, सफलता और समृद्धि अपना निवास बना लेते हैं।"

इसलिए यदि जीवन में आप शांति, समृद्धि, प्रेम और सफलता की चाह रखते हैं, तो प्रतिदिन श्रद्धा और भक्ति से श्रीकृष्ण चालीसा का पाठ अवश्य करें। मुरलीधर की मधुर ध्वनि आपके जीवन से हर प्रकार का दुख दूर करेगी और आपके हृदय में दिव्य आनंद की अनुभूति कराएगी। श्रीकृष्ण की कृपा से आपका जीवन प्रकाश, प्रेम और पूर्णता से भर जाएगा।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

# वाराणसी को मिलेगा देश का पहला चार रेल लाइन वाला डबल-डेकर पुल, 'सिग्नेचर ब्रिज' बनेगा काशी की नई पहचान

(जीएनएस)। वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी को एक और बड़ी सौगात मिलने जा रही है। केंद्र सरकार ने गंगा नदी पर देश के पहले चार रेल लाइनों वाले डबल-डेकर रेल-सह-सड़क पुल के निर्माण को मंजूरी दे दी है। यह परियोजना न केवल इंजीनियरिंग का अद्भुत उदाहरण होगी, बल्कि वाराणसी की पहचान को एक नई ऊंचाई भी देगी। इसे 'सिग्नेचर ब्रिज' नाम दिया गया है, जो आने वाले वर्षों में काशी का नया प्रतीक बनने जा रहा है। शनिवार को केंद्रीय रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने वाराणसी में इस महत्वाकांक्षी परियोजना का विस्तार से खाका पेश किया। उन्होंने बताया कि इस मेगा प्रोजेक्ट की कुल लागत 2,642 करोड़ रुपये तय की गई है और इसका निर्माण कार्य वर्ष 2028 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। यह पुल वाराणसी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन (मुगलसराय) के बीच रेल और सड़क दोनों स्तरों पर कनेक्टिविटी को मजबूत करेगा, जिससे पूर्वी भारत के यातायात नेटवर्क में एक क्रांतिकारी बदलाव देखने को मिलेगा।

रेल मंत्री ने बताया कि पुल की नींव नदी तल से 120 फीट नीचे तक जाएगी, जो इसे एक मजबूत और दीर्घकालिक संरचना बनाएगी। इसका डिजाइन पूरी तरह डबल-डेकर होगा — नीचे के हिस्से में चार रेलवे ट्रैक होंगे और ऊपरी हिस्से में छह लेन का हाईवे मार्ग बनाया जाएगा। भारत में यह पहला ऐसा पुल होगा, जिस पर एक साथ चार रेल लाइनें चलेंगी और ऊपर से भारी वाहन भी सरपट दौड़ेंगे। यह संयोजन भारतीय इंजीनियरिंग को वैश्विक स्तर पर नई पहचान दिलाने वाला साबित होगा।



**नमो घाट के पास बनेगा सिग्नेचर ब्रिज**

यह विशाल पुल नमो घाट के पास, वर्तमान मालवीय पुल (राजघाट पुल) से लगभग 50 मीटर की दूरी पर बनाया जाएगा। यह पुल काशी रेलवे स्टेशन को सीधे जोड़ेगा, जिससे शहर के भीतरी और बाहरी क्षेत्रों के बीच सुगम यातायात सुनिश्चित होगा। पुल के पूरा होने से न केवल वाराणसी के भीतर ट्रैफिक जाम की समस्या में कमी आएगी, बल्कि पश्चिम बंगाल और झारखंड की ओर जाने वाली मालगाड़ियों और वाहनों को भी अब लंबा रास्ता तय नहीं करना पड़ेगा। इससे ईंधन की बचत और यात्रा समय में भारी कमी आएगी।

**ट्रैफिक प्रबंधन के लिए नई योजना**

अश्विनी वैष्णव ने बताया कि 'सिग्नेचर ब्रिज' परियोजना के साथ-साथ शहर के भीतर यातायात को सुचारू रखने के लिए कई नवाचार योजनाएं भी लागू की जा रही हैं। पुल से उतरने वाले वाहनों को सीधे स्टेशन क्षेत्र में नहीं लाया जाएगा, बल्कि उन्हें आगे बढ़ाकर निकासी दी जाएगी ताकि जंक्शन पर जाम की स्थिति न बने। इसके साथ ही स्टेशन क्षेत्र में तीन नए मार्गों से प्रवेश और निकास की सुविधा विकसित की जा रही है, जिससे त्योहारों और भीड़भाड़ के समय यातायात का दबाव कम होगा।

**रेल नेटवर्क को मिलेगा नया रूप**

वाराणसी कैंट स्टेशन पर पूर्वोत्तर दिशा से आने वाली ट्रेनों के लिए एक नया टर्मिनल भी बनाया जा रहा है। वहीं, पुराने आंध्रा पुल की जटिल समस्या को खत्म करने के लिए एक बड़ा फ्लाईओवर बनाया जाएगा। इसके अतिरिक्त, स्थानीय मांगों को ध्यान में रखते हुए काशी सिटी रेलवे स्टेशन का पूर्ण पुनर्विकास किया जाएगा।

**अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत 41 करोड़ रुपये स्वीकृत**

काशी सिटी स्टेशन को 'अमृत भारत स्टेशन योजना' के तहत आधुनिक स्वरूप दिया जाएगा, जिसके लिए सरकार ने 41 करोड़ रुपये मंजूर किए हैं। स्टेशन पर सभी प्लेटफॉर्मों को जोड़ने के लिए नया फुट ओवरब्रिज (FOB) बनाया जाएगा, ताकि यात्रियों को पटरियां पार करने में कोई असुविधा न हो। विशेष रूप से त्योहारों और धार्मिक अवसरों पर आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए यह कदम बेहद उपयोगी साबित होगा।

रेल मंत्री ने बताया कि बनारस स्टेशन के सामने के हिस्से को भी आधुनिक, आकर्षक और पर्यावरण-अनुकूल रूप में विकसित किया जा रहा है। उन्होंने कहा, "वाराणसी में हो रही ये परियोजनाएं केवल आज की जरूरतें नहीं पूरी करेंगी, बल्कि आने वाले दशकों के लिए काशी की कनेक्टिविटी को विश्वस्तरीय स्तर पर पहुंचा देंगी। सिग्नेचर ब्रिज, वाराणसी की तकनीकी प्रगति और सांस्कृतिक विरासत — दोनों का प्रतीक बनेगा।"

कुल मिलाकर, यह परियोजना वाराणसी को भारत के सबसे आधुनिक रेल और सड़क नेटवर्क हब के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम साबित होगी — जहां गंगा के तट पर प्राचीन संस्कृति और अत्याधुनिक तकनीक का संगम देखने को मिलेगा।

# 'मैं इन चींटियों के साथ नहीं रह सकती...' तेलंगाना में महिला की आत्महत्या से दहल उठा इलाका, सुसाइड नोट ने किया सबको हैरान



(जीएनएस)। नई दिल्ली। तेलंगाना के संगारेड्डी जिले से एक ऐसा मामला सामने आया है जिसने हर किसी को अंदर तक झकझोर दिया है। यहां 35 वर्षीय एक विवाहित महिला ने सिर्फ चींटियों के डर से अपनी जान दे दी। पुलिस के अनुसार यह दर्दनाक घटना 4 नवंबर 2025 को हुई। मृतका की शादी वर्ष 2022 में हुई थी और उसकी तीन साल की एक मासूम बेटी है।

पुलिस के मुताबिक, महिला का शव उसके घर में छत के पंखे से लटका मिला। उसने आत्महत्या से कुछ घंटे पहले अपनी बेटी को एक रिश्तेदार के घर यह कहकर छोड़ दिया था कि वह सफाई करने के बाद उसे लेने आएगी। लेकिन जब शाम को उसका पति काम से लौटा तो घर अंदर से बंद मिला। बार-बार दरवाजा खटखटाने पर कोई जवाब नहीं आया, जिसके बाद पड़ोसियों की मदद से दरवाजा तोड़ा गया। अंदर का नजारा देखकर सबके होश उड़ गए — महिला पंखे से लटकी हुई थी।

पुलिस को घटनास्थल से एक छोटा सा सुसाइड नोट मिला, जिसमें लिखा था — "श्री माफ करना, मैं इन चींटियों के साथ नहीं रह सकती। बेटी का ध्यान रखना। अन्नवरम तिरुपति में 1116 रुपये... येलम्मा वाड़ी बिय्यं मत भूलना।"

इस चिट्ठी के शब्द जितने कम हैं, उतने ही गहरे दर्द से भरे हुए हैं। इसमें 'अन्नवरम', 'तिरुपति' और 'येलम्मा वाड़ी बिय्यं' जैसे धार्मिक संदर्भों का उल्लेख मिला है। ये सभी दक्षिण भारत के प्रसिद्ध मंदिर हैं, जहां भक्त भगवान को चावल और धन अर्पित करते हैं। इससे संकेत मिलता है कि महिला धार्मिक प्रवृत्ति की थी और आखिरी समय में भी उसने अपने भगवान से क्षमा मांगी।

पुलिस की प्रारंभिक जांच में सामने आया कि महिला को चींटियों से अत्यधिक डर था। यह डर बचपन से ही उसके अंदर बैठा हुआ था। परिवारवालों ने बताया कि कई बार घर में चींटियाँ दिखाई देने पर वह पैनिक में चली जाती थी। कुछ महीने पहले वह मनचेरियल जिले के एक अस्पताल में काउंसलिंग भी ले चुकी थी, लेकिन मानसिक स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं हुआ।

तेलंगाना सरकार के इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ की अधीक्षक डॉ. अनीता रायराला ने बताया कि यह मामला "मायर्मेकोफोबिया (Myrmecophobia)" का प्रतीक हो सकता है — यानी चींटियों का गहरा मानसिक भय। डॉ. रायराला ने कहा, "अपने पूरे करियर में मैंने ऐसा केस पहले कभी नहीं देखा। आमतौर पर लोग ऊँचाई, अंधेरे, जानवरों या बंद जगहों से डरते हैं, लेकिन चींटियों से इतना तीव्र भय अत्यंत दुर्लभ है।"

उन्होंने समझाया कि फोबिया आमतौर पर बचपन में किसी डरावनी घटना से शुरू होता है। यदि परिवार उस डर को समय रहते पहचान ले और मनोवैज्ञानिक सहायता ली जाए तो मरीज पूरी तरह ठीक हो सकता है। एक्सपोजर थेरेपी, कॉग्निटिव बिहेवियर थेरेपी (CBT) और एंटी-एंग्जायटी दवाओं से ऐसे डर को नियंत्रित किया जा सकता है।

डॉ. अनीता ने यह भी कहा कि यह संभव है कि महिला केवल फोबिया से नहीं, बल्कि डिप्रेशन और चिंता के मिश्रण से गुजर रही थी। उन्होंने जनता से अपील की —

"अगर किसी को किसी चीज़ से असामान्य डर है, नींद नहीं आती, बेचैनी बढ़ रही है या आत्मघाती विचार आने लगे हैं, तो तुरंत मनोचिकित्सक की मदद लें। यह शर्म की बात नहीं, बल्कि जीवन बचाने का कदम है।"

महिला की मौत ने स्थानीय लोगों को हिलाकर रख दिया है। इलाके के लोगों का कहना है कि वह सामान्य जीवन जी रही थी, अपनी बेटी से बहुत प्यार करती थी, लेकिन हाल के दिनों में वह अकेली और तनावग्रस्त रहने लगी थी।

इस घटना ने समाज के सामने एक बार फिर यह सवाल खड़ा किया है कि मानसिक स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता कितनी ज़रूरी है। अक्सर लोग ऐसे डर या मानसिक असंतुलन को "कमज़ोरी" या "मूर्खता" समझकर नज़रअंदाज़ कर देते हैं, जबकि यही छोटी-सी अनदेखी एक जिंदगी को खत्म कर सकती है।

तेलंगाना पुलिस ने फिलहाल मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है और मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों की टीम भी मामले की रिपोर्ट तैयार कर रही है।

एक छोटा-सा सुसाइड नोट, कुछ शब्दों का दर्द — और पीछे छूट गई एक तीन साल की बच्ची, जो शायद कभी समझ नहीं पाएगी कि उसकी मां को आखिर "चींटियों से डर" ने क्यों निगल लिया।

**भारत पर्व-2025, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, एकता नगर : 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत'**

# एकता नगर के प्रकाश पर्व में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विकसित भारत का प्रतीक 'ग्रीन ट्री' बना आकर्षण का केन्द्र

- भारत पर्व–2025 के थीम पैवेलियन का मुख्य आकर्षण 'ग्रीन ट्री' विकास, टेक्नोलॉजी तथा एकता का झिलमिलाता प्रतीक
- 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को उजागर करने वाला 'ग्रीन ट्री' प्रकाश एवं प्रगति का अनूठा प्रदर्शन



(जीएनएस)। गांधीनगर : सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में गुजरात के एकता नगर में भारत सरकार तथा गुजरात सरकार के सहयोग से विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' के परिसर में भव्य भारत पर्व-2025 का आयोजन हुआ है। यह पहली बार है कि भारत पर्व दिल्ली से बाहर आयोजित हो रहा है और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में गुजरात ने इस पर्व को भव्यता दी है। इस पर्व के दौरान देश की विविधता में एकता का प्रतीक दर्शाने वाले सांस्कृतिक, टेक्नोलॉजिकल तथा देशभक्ति से प्रेरित कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है।

भारत पर्व-2025 के थीम पैवेलियन में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में साकार हुए विभिन्न राष्ट्रीय प्रोजेक्ट्स तथा विकास के प्रतीकों को अनूठे ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस पैवेलियन का मुख्य आकर्षण 'ग्रीन ट्री' है, जो विकसित भारत के सपने को प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त करता है। प्रकाशित इन्स्टॉलेशन के रूप में खड़े इस ग्रीन ट्री द्वारा भारत के सर्वांगीण विकास की दिशा एवं प्रगति का दृष्टिकोण प्रस्तुत हुआ है। इस दृश्यावली ने देशभक्ति, आर्ट तथा टेक्नोलॉजी का अद्भुत संगम सृजित किया है; जो देश-विदेश के पर्यटकों को अद्भुत अनुभूति कराता है। 'ग्रीन ट्री' इन्स्टॉलेशन में प्रधानमंत्री के दूरदर्शी विजन के तहत साकार हुए राष्ट्रीय स्तर के माइल स्टोन प्रोजेक्ट्स को प्रकाशित ढंग से प्रस्तुत किया गया है; जैसे कि सूरत डायमंड बोर्स, नवी मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट, तेजस फाइटर जेट, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, ऑपरेशन सिंदूर, लक्षद्वीप विकास, श्री राम जन्मभूमि मंदिर, स्टैच्यू ऑफ इक्वैलिटी, महाकुंभ-2025, आईएनएस विक्रांत, सोनमर्ग टनल, विझिंजाम अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह तथा अटल सेतु जैसे प्रोजेक्ट्स। ये सभी प्रोजेक्ट्स प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत' के विजन को साकार करने वाले प्रतीकात्मक चरणों के रूप में झिलमिलाते हैं।

भारत पर्व के समग्र परिसर में प्रकाश, संगीत तथा टेक्नलॉजी का समन्वय देशभक्ति की लहर फैलाता है। 'ग्रीन ट्री' केवल एक कलात्मक इन्स्टॉलेशन नहीं है; बल्कि भारत के विकास, प्रगति तथा पर्यावरण के प्रति प्रतिबद्धता का जीवंत प्रतीक है। इसमें दर्शाया गया प्रत्येक प्रोजेक्ट प्रधानमंत्री के नेशन बिल्डिंग विजन का दृश्यरूपी साकार स्वरूप है। 'ग्रीन ट्री' यानी भारत के सपने का विकसित वटवृक्ष। एकता नगर में भारत पर्व के दौरान देश के विभिन्न राज्यों की लोककला, संगीत, नृत्य एवं परंपरा का मनोहर प्रदर्शन हुआ है; जो 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की जीवंत अनुभूति कराता है। इस प्रकाश पर्व-2025 के माध्यम से भारत के विकास एवं एकता का अद्भुत दृश्य सृजित हुआ है; जो राष्ट्रप्रेम, गौरव तथा भविष्य के प्रति विश्वास को अधिक सुदृढ़ बनाता है। भारत पर्व-2025 केवल एक उत्सव नहीं है, बल्कि प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत' के विजन को साकार करने वाला राष्ट्रीय प्रदर्शन है। एकता नगर का यह प्रकाश पर्व भविष्य के उज्ज्वल भारत का संदेश दे रहा है; जहाँ प्रगति, एकता तथा देशभक्ति एक साथ झिलमिलाते हैं।

# भावनगर परा स्टेशन पर यात्रियों की सुविधा हेतु कैटरिंग स्टॉल का शुभारंभ



(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के अंतर्गत आने वाले भावनगर परा स्टेशन पर यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए कैटरिंग स्टॉल का शुभारंभ दिनांक 08 नवम्बर, 2025 को किया गया।

इस स्टॉल का उद्घाटन वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस अवसर पर वेस्टर्न रेलवे एम्प्लॉइज यूनियन के सचिव श्री एस. के. श्रीवास्तव, मंडल वाणिज्य निरीक्षक श्री तुषार शेख, मंडल परिचालन निरीक्षक श्री संजय सिंह, स्टेशन अधीक्षक श्री कृष्ण कुमार, रेलवे कर्मचारीगण एवं रेल यात्री उपस्थित रहे।

उद्घाटन अवसर पर श्री त्रिपाठी ने कैटरिंग स्टॉल के लाइसेंसी श्री आकाश कुमार को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने श्री आकाश कुमार को प्रोत्साहित करते हुए स्टॉल से खरीददारी भी की। उपस्थित अन्य कर्मचारियों एवं यात्रियों ने भी स्टॉल से खाने-पीने की वस्तुएं क्रय कर स्थानीय स्तर पर शुरू की गई इस सुविधा की सराहना की। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने कहा कि इस स्टॉल के खुलने से भावनगर परा स्टेशन से यात्रा करने वाले यात्रियों को स्वच्छ, ताजा एवं गुणवत्तापूर्ण खाद्य सामग्री उचित दरों पर प्राप्त होगी, जिससे यात्री सुविधाओं में और अधिक वृद्धि होगी। मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने कहा की भावनगर मंडल द्वारा यात्रियों की सुविधा हेतु स्टेशनों पर विभिन्न सेवाओं के विस्तार की दिशा में यह एक और महत्वपूर्ण कदम है।

# मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल यूनिटी मार्च के हिस्से के रूप में रविवार को जूनागढ से राज्यव्यापी पदयात्रा का प्रारंभ कराएंगे

**प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से मनाई जा रही सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर यूनिटी मार्च - पदयात्रा का आयोजन तथा आत्मनिर्भर भारत की शपथ ली जाएगी**

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल 9 नवंबर रविवार को यूनिटी मार्च के हिस्से के रूप में आयोजित होने वाली राज्यव्यापी पदयात्रा का जूनागढ से प्रारंभ कराएंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से मनाई जा रही सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर राज्य सरकार के खेल, युवा एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के विभाग तथा जूनागढ जिला प्रशासन के उपक्रम से इस यूनिटी मार्च का आयोजन किया गया है।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 1947 में 9 नवंबर को जूनागढ नवाबी शासन से स्वतंत्र हुआ था और उसका भारत में विलय हुआ था, जिसे जूनागढ मुक्ति दिवस के रूप में मनाया जाता है। सरदार वल्लभभाई पटेल के महत्वपूर्ण योगदान से जूनागढ का भारत में विलय कराए जाने के इस यादगार दिवस के समय ही इस वर्ष मनाई जा रही सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में यूनिटी मार्च के हिस्से के रूप में इस पदयात्रा का आयोजन विशेष महत्वपूर्ण है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल रविवार सुबह 7 बजे इस पदयात्रा का प्रारंभ कराएंगे। इस अवसर पर जूनागढ जिला प्रभारी सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. प्रद्युमनभाई वाजा, जिला सह प्रभारी विधि राज्य मंत्री श्री कौशिकभाई वेकरिया, जूनागढ के महापौर श्री धर्मेश पोशिया, विधायक तथा पदाधिकारी भी उपस्थित रहेंगे। इस पदायात्रा में समाज के सभी वर्ग, कॉलेज छात्र, एनसीसी, एनएसएस, माई भारत वॉलेंटियर्स, सहकारी संगठन, विभिन्न राजनीतिक दल, औद्योगिक संगठन, वाणिज्यिक संगठन, धार्मिक संस्थान, स्थानीय साधु-संत, इन्फ्लूएंसर्स, पूर्व सैनिक एवं परिवार, खिलाड़ी, प्रगतिशील किसान, प्रबुद्ध नागरिक, कामगार, सामाजिक संस्थाएँ, स्थानीय निकाय के पदाधिकारी, स्वयं-सहायता समूह तथा बड़ी संख्या में नागरिक सहभागी होंगे और आत्मनिर्भर भारत की शपथ लेंगे।

# प्रतापनगर यार्ड में इंजीनियरिंग कार्य हेतु ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें रद्द रहेंगी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के विश्वामित्री – डभोई सेक्शन में स्थित प्रतापनगर स्टेशन पर यार्ड रिमोडलिंग कार्य हेतु इंजीनियरिंग ब्लॉक लिया जाएगा। इस ब्लॉक के कारण 09 नवम्बर 2025 से 13 नवम्बर 2025 तक कुछ ट्रेनें रद्द रहेंगी। जिसका विवरण इस प्रकार है:

पूर्णतः रद्द ट्रेनें

1.ट्रेन नं 69202 एकतानगर – प्रतापनगर मेमू ट्रेन 09 नवम्बर से 13 नवम्बर तक रद्द रहेगी

2.ट्रेन नं 69203 प्रतापनगर - एकतानगर मेमू ट्रेन 09 नवम्बर से 13 नवम्बर तक रद्द रहेगी

3.ट्रेन नं 59122 छोटाउदैपुर - प्रतापनगर पैसेंजर ट्रेन 09 नवम्बर से 13 नवम्बर तक रद्द रहेगी



4.ट्रेन नं 59125 प्रतापनगर – छोटाउदैपुर पैसेंजर ट्रेन 09 नवम्बर से 13 नवम्बर तक रद्द रहेगी

रेल यात्रियों से निवेदन है कि उपरोक्त बदलाव को ध्यान में रखकर यात्रा करें। ट्रेनों के परिचालन समय, ठहराव और संरचना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

# देश की प्रगति का इंजन है बरेका, लोको निर्माण की गुणवत्ता पर कोई समझौता नहीं: अश्विनी वैष्णव

(जीएनएस)। वाराणसी। केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को बनारस रेल इंजन कारखाना (बरेका) का विस्तृत निरीक्षण करते हुए कहा कि भारतीय रेल के लिए गुणवत्ता सर्वोच्च प्राथमिकता है और लोको निर्माण में किसी भी स्तर पर समझौता स्वीकार्य नहीं होगा। उन्होंने कहा कि "बरेका केवल लोकोमोटिव नहीं बनाता, बल्कि यह भारत की प्रगति के इंजन को गति देता है।"

निरीक्षण के दौरान रेल मंत्री ने लोको फ्रेम शॉप, असेम्बली शॉप और टेस्ट शॉप का दौरा किया। उन्होंने प्रत्येक निर्माण इकाई में जाकर उत्पादन प्रक्रिया की बारीकियों को समझा और कर्मचारियों से प्रत्यक्ष संवाद किया। मंत्री ने मशीनों के रखरखाव, स्वचालित तकनीक के प्रयोग, ऊर्जा दक्षता और सुरक्षा मानकों की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने कहा कि भारतीय रेल आज जिस आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ रही है, उसका मूल आधार ही गुणवत्ता और नवाचार है। अश्विनी वैष्णव ने निर्माण इकाइयों में कार्यरत तकनीकी विशेषज्ञों और इंजीनियरों से भी विस्तार से चर्चा की। उन्होंने उत्पादन क्षमता बढ़ाने, कार्यप्रणाली में पारदर्शिता लाने और निर्माण लागत घटाने के सुझाव आमंत्रित किए। रेल मंत्री ने कहा कि "गुणवत्ता और दक्षता बढ़ाने के लिए कर्मचारियों के सुझाव अमूल्य हैं। यदि हर कर्मचारी अपने काम में नवाचार की भावना रखे, तो भारतीय रेल विश्व की सबसे आधुनिक रेल प्रणाली बन सकती है।" निरीक्षण के दौरान मंत्री ने महिला कर्मचारियों से विशेष रूप से मुलाकात की और उनके योगदान की सराहना की। उन्होंने कहा कि भारतीय रेल के आधुनिकीकरण में महिलाओं की भूमिका लगातार सशक्त हो रही है। "बरेका की महिला इंजीनियर और तकनीशियन जिस दक्षता से काम कर रही हैं, वह न केवल संगठन के लिए प्रेरणादायक है बल्कि यह भारत की प्रगति में महिलाओं की बढ़ती भूमिका का प्रतीक भी है," उन्होंने कहा।

रेल मंत्री ने बरेका की स्वच्छता व्यवस्था, हरित ऊर्जा प्रयोग और पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि बरेका का प्रयास केवल तकनीकी उत्कृष्टता का उदाहरण नहीं, बल्कि एक "ग्रीन इंडस्ट्री मॉडल" के रूप में भी देश के सामने है। कर्मचारियों के साथ संवाद के दौरान मंत्री ने यह भी कहा कि भारत के पास अब लोकोमोटिव निर्माण में विश्व स्तरीय क्षमता है।

# गुजरात आदिवासी समुदाय के स्वास्थ्य के लिए जीनोम सीक्वेंसिंग प्रोजेक्ट शुरू करने वाला देश का पहला राज्य

- जीनोम सीक्वेंसिंग प्रोजेक्ट : आदिवासी समुदाय के आनुवंशिक रोगों की पहचान होने से किफायती निदान पद्धति का विकास होगा, 1 लाख रुपए के बजाय केवल 1000-1500 रुपए में होगा परीक्षण
- गुजरात की अत्याधुनिक जीनोम सुविधा: 48 से 72 घंटे में होती है 25-50 नमूनों की सीक्वेंसिंग
- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात सरकार आदिवासी समुदायों को सशक्त बनाने को प्रतिबद्ध

(जीएनएस)। गांधीनगर, 08 नवंबर : गुजरात ने आदिवासी लोक नायक भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर वर्ष 2025 को 'जनजातीय गौरव वर्ष' के रूप में मनाने का संकल्प किया है। भगवान बिरसा मुंडा आदिवासी समाज की अस्मिता, आत्मसम्मान और बहादुरी के प्रतीक हैं, उनके सम्मान में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जनजातीय गौरव दिवस की पहल शुरू की है। श्री मोदी दृढ़तापूर्वक यह मानते हैं कि जब हमारे आदिवासी समुदाय समृद्ध होंगे, तो भारत भी समृद्ध होगा। उनके इस विजन का अनुसरण करते हुए गुजरात में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य सरकार गुजरात के आदिवासी समुदायों को सशक्त बनाने को प्रतिबद्ध है। इस प्रतिबद्धता के परिणामस्वरूप गुजरात, भारत का पहला ऐसा राज्य बन गया है, जिसने आदिवासी समुदायों पर ध्यान केंद्रित करते हुए व्यापक जीनोम सीक्वेंसिंग (अनुक्रमण) प्रोजेक्ट शुरू किया है।

## जीनोम सीक्वेंसिंग और आदिवासी समुदाय के लिए इसका महत्व

शरीर की कोशिकाओं के अंदर मौजूद आनुवंशिक सामग्री को जीनोम कहा जाता है। कोशिका के अंदर जीन का सटीक स्थान और उसकी रचना को समझने के लिए जीनोम सीक्वेंसिंग की जाती है। यह जीनोम में होने वाले परिवर्तन के बारे में बताता है। गुजरात की आदिवासी आबादी लंबे समय से थैलेसीमिया और सिकल सेल जैसी आनुवंशिक बीमारियों से जूझ रही है। कुछ आनुवंशिक बीमारियां ऐसी होती हैं, जिनके बारे में आखिरी स्टेज तक पता नहीं चल पाता, जिससे उपचार और अधिक जटिल हो जाता है। जीनोम सीक्वेंसिंग की मदद से वैज्ञानिक म्यूटेशन (परिवर्तनों) का पता लगा सकते हैं, कम लागत वाले डायग्नोस्टिक पैनल बना सकते हैं, और आईवीएफ प्रक्रियाओं के दौरान प्रसवपूर्व या फिर भ्रूण-स्तरीय परीक्षण भी कर सकते हैं।

## जीनोम मैपिंग के जरिए आदिवासी समुदायों के स्वास्थ्य में सुधार का संकल्प



यह प्रोजेक्ट आदिवासी समुदायों का स्वास्थ्य कल्याण सुनिश्चित करते हुए बेहतर स्वास्थ्य-उन्मुख योजनाएं बनाने में मदद करेगा। इससे बीमारियों का पता लगाने, कुपोषण और एनीमिया जैसी स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान करने तथा सिकल सेल एनीमिया एवं ग्लूकोज-6-फॉस्फेट डिहाइड्रोजनेज (जी6पीडी) की कमी जैसे आनुवंशिक विकारों का शीघ्र निदान संभव होगा।

उदाहरण के लिए, यदि माता और पिता, दोनों में बीटा-ग्लोबिन जीन (जिसे वाहक कहा जाता है) की एक म्यूटेटेड कॉपी है, तो इस बात की 25 फीसदी संभावना है कि उनके बच्चे को दोनों म्यूटेटेड कॉपियां विरासत में मिलेंगी, जिसके चलते सिकल सेल रोग विकसित होगा। जीनोम मैपिंग के माध्यम से ऐसे वाहकों की शीघ्र पहचान की जा सकती है, जिससे रोग के बारे में शीघ्र पता लगाया जा सके और निवारक उपाय किए जा सकें। इससे समुदाय के आनुवंशिक लक्षणों के अनुसार डीएनए परीक्षण तैयार किया जा सकता है। ये परीक्षण केवल संबंधित समुदाय में आम तौर पर होने वाले जीन परितवर्तनों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, इसका खर्च केवल 1000 से 1500 रुपए तक होता है। इसकी तुलना में, संपूर्ण जीनोम सीक्वेंसिंग व्यक्ति के सभी जीनों की पहचान करता है, जिसमें प्रति नमूना लगभग 1 लाख रुपए का खर्च होता है और एक्सोम सीक्वेंसिंग केवल जीन के कोडिंग हिस्सों को पढ़ता है, जिसमें प्रति नमूना लगभग 18,000 से 20,000 रुपए का खर्च होता है। इस प्रकार, समुदाय-विशिष्ट परीक्षण ज्यादा व्यावहारिक और कम खर्चीले होते हैं।

## गुजरात जीनोम सीक्वेंसिग प्रोजेक्ट शुरू करने वाला देश का पहला राज्य

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात देश का पहला ऐसा राज्य बन गया है, जिसने विशेष आदिवासी समुदायों के लिए बड़े पैमाने पर जीनोम सीक्वेंसिंग प्रोजेक्ट शुरू किया है। गुजरात बायोटेक्नोलॉजी रिसर्च सेंटर (जीबीआरसी) के नेतृत्व में यह प्रोजेक्ट आदिवासी समुदायों के आनुवंशिक खाके (जेनेटिक ब्लूप्रिंट) का अध्ययन करके रोग के परीक्षण, उपचार और स्वास्थ्य देखभाल पर ध्यान केंद्रित करता है। उल्लेखनीय है कि जीनोम इंडिया पहल के तहत कार्यरत जीनोम सीक्वेंसिंग प्रोजेक्ट यह समझने का प्रयास करता है कि आखिर क्यों आदिवासी समुदायों में आनुवंशिक विकृतियां बढ़ रही हैं, जो अक्सर अंतर्विवाह (अपने ही समूह में विवाह) और सीमित आनुवंशिक विविधता के कारण होते हैं।

## 11 जिलों के 31 आदिवासी समुदायों के डीएनए नमूने एकत्र किए जाएंगे

गुजरात में जीनोम सीक्वेंसिंग प्रोजेक्ट के अंतर्गत शोधकर्ता 11 जिलों के 31 आदिवासी समुदायों में से डीएनए के नमूने एकत्र कर एक डेटाबेस बना रहे हैं, जो इन समूहों में आनुवंशिक रोगों के निदान और उपचार के तरीकों को सुधारने में मदद करेगा। वित्तीय वर्ष 2025-26 में, गुजरात सरकार ने एक व्यापक जीनोम डेटाबेस बनाने और मौजूदा डेटा अंतराल को पाटने के लिए 'आदिवासी आबादी के लिए रेफरेंस जीनोम डेटाबेस का निर्माण' प्रोजेक्ट को स्वीकृति दी है। यह प्रोजेक्ट भारत सरकार के बायोटेक्नोलॉजी विभाग के जीनोम इंडिया प्रोजेक्ट के सहयोग से चलाय जा रहा है।

## आदिवासी समुदाय के स्वास्थ्य के लिए जीनोम विज्ञान का उपयोग करने में गुजरात अग्रणी

गुजरात में जीनोम अनुसंधान को गति देने के लिए जीबीआरसी में आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं, जिनमें लॉन्ग-रीड सीक्वेंसर सहित तीन जीनोम सीक्वेंसिंग मशीनें शामिल हैं, जो एक समय में 5000-10,000 बेस पेयर (मूल जोड़े) का विश्लेषण कर सकती है, जिससे वैज्ञानिकों को जटिल आनुवंशिक बदलावों का पता लगाने में मदद मिलती है। इन मशीनों का उपयोग पहले कोविड-19 के दौरान किया जाता था, लेकिन अब इनका उपयोग व्यापक जीनोम अनुसंधान के लिए किया जा रहा है। गुजरात में, प्रत्येक सीक्वेंसिंग बैच 25-50 मानव जीनोम की सीक्वेंसिंग कर सकता है, इसके परिणाम 48 से 72 घंटे में तैयार हो जाते हैं। जीबीआरसी ने लागत प्रबंधन और स्थानीय इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश करके प्रति नमूना खर्च 85,000 रुपए से घटाकर लगभग 60,000 रुपए कर दिया है। यह अनुसंधान डॉक्टरों को सुरक्षित और ज्यादा प्रभावी उपचार प्रदान करने के साथ ही यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकता है कि आदिवासी समुदाय को आधुनिक जीनोम विज्ञान का लाभ मिले।

## हुगली में चार साल की बच्ची से दरिंदगी, परिजनों ने उठाया पुलिस पर सच्चाई दबाने का आरोप

**(जीएनएस)।** पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के तारकेश्वर से एक ऐसी घटना सामने आई है जिसने पूरे राज्य को झकझोर कर रख दिया है। यहां महज चार साल की मासूम बच्ची के साथ कथित रूप से दुष्कर्म किया गया। परिवार और स्थानीय लोगों ने आरोप लगाया है कि पुलिस मामले की गंभीरता को दबाने की कोशिश कर रही है।घटना शुक्रवार देर रात की बताई जा रही है, जब बच्ची अपने परिवार के साथ घर में मच्छरदानी लगाकर सो रही थी। शनिवार सुबह कुछ अज्ञात दरिंदे मच्छरदानी काटकर बच्ची को उठा ले गए। सुबह जब परिवार की आंख खुली तो बच्ची गायब थी। पूरे मोहल्ले में हड़कंप मच गया। परिजनों और पड़ोसियों ने खोजबीन शुरू की। कई घंटों की तलाश के बाद बच्ची तारकेश्वर रेलवे लाइन के पास एक ऊंचे नाले के किनारे खून से लथपथ मिली। उसकी हालत इतनी खराब थी कि उसे तुरंत तारकेश्वर ग्रामीण अस्पताल ले जाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे चंदननगर रेफर कर दिया गया। डॉक्टरों ने बताया कि बच्ची की हालत गंभीर है और उसके शरीर पर चोटों के स्पष्ट निशान हैं। इस घटना ने पूरे इलाके में आक्रोश और भय का माहौल पैदा कर दिया है।



घटना सामने आने के बाद विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी ने राज्य सरकार और पुलिस पर तीखा हमला बोला है। भाजपा के नेता और पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता सुभेंदु अधिकारी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा — "तारकेश्वर में चार साल की बच्ची के साथ बलात्कार हुआ है। परिवार पुलिस के पास गया, लेकिन एफआईआर दर्ज नहीं की गई। बच्ची को अस्पताल भेजा गया और फिर चंदननगर रेफर कर दिया गया। पुलिस अपराध को दबाने में लगी है।" अधिकारी ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और उनकी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा — "यह ममता बनर्जी के बेलगाम शासन का असली चेहरा है। एक बच्ची की जिंदगी बर्बाद हो गई, फिर भी पुलिस सच्चाई को दबाकर राज्य की नकली कानून-व्यवस्था को बचाने में लगी है। क्या वे अधिकारी हैं या ममता बनर्जी के चाटुकार?" उन्होंने लिखा कि पश्चिम बंगाल में हर बार एक ही पैटर्न देखने को मिलता है — "बलात्कार, एफआईआर में देरी, पीड़िता का अस्पताल में संघर्ष, मीडिया पर चुप्पी और आखिर में राजनीतिक दबाव।"

एनडीटीवी की रिपोर्ट के अनुसार, पुलिस ने अब इस घटना में मामला दर्ज कर लिया है और जांच शुरू कर दी है। बच्ची के परिवार से पूछताछ की जा रही है तथा आसपास के इलाकों के संदिग्ध लोगों की तलाश में कई टीमें बनाई गई हैं। हालांकि, स्थानीय लोगों का आरोप है कि शुरुआती घंटों में पुलिस की लापरवाही से सबूत नष्ट हो गए, जिससे जांच प्रभावित हो सकती है।

घटना ने न सिर्फ तारकेश्वर बल्कि पूरे पश्चिम बंगाल में सुरक्षा और कानून व्यवस्था को लेकर सवाल खड़े कर दिए हैं। विपक्ष का कहना है कि सरकार संवेदनशील मामलों को दबाने में लगी रहती है, जबकि पीड़ित परिवार न्याय के लिए दर-दर भटकते हैं।

इस बीच, तारकेश्वर और आसपास के इलाकों में तनाव का माहौल है। लोग गुस्से में हैं और न्याय की मांग को लेकर प्रदर्शन की तैयारी में हैं। बच्ची के घर पर लोगों का तांता लगा हुआ है। हर कोई यही पूछ रहा है कि आखिर चार साल की मासूम ने किस गुनाह की सजा पाई।

राज्य की राजनीति में इस घटना ने नया तूफान ला दिया है। जहां भाजपा ने इसे "मानवता के खिलाफ अपराध" बताते हुए सीबीआई जांच की मांग की है, वहीं राज्य सरकार ने दावा किया है कि पुलिस मामले की हर दिशा में गंभीरता से जांच कर रही है और दोषियों को जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।

लेकिन सवाल अभी भी वही है — क्या पश्चिम बंगाल में मासूमों की सुरक्षा अब सिर्फ एक राजनीतिक मुद्दा बनकर रह गई है, या इस बार न्याय सच में मिलेगा?

## इंसाफ की लड़ाई में मिला धोखा गैंगरेप पीड़िता से ही वकील ने किया दुष्कर्म, आगरा का शर्मनाक मामला

**(जीएनएस)।** आगरा से एक ऐसा मामला सामने आया है जिसने इंसाफ और भरोसे की नींव को झकझोर दिया है। जिस वकील पर एक गैंगरेप पीड़िता ने अपनी इज्जत और न्याय दोनों का भरोसा रखा, उसी ने उसकी अस्मिता को रौंद डाला। यह सनसनीखेज वारदात आगरा के नवनिर्मित थाना एकता क्षेत्र की है, जहां गैंगरेप पीड़िता का केस लड़ रहे अधिवक्ता जितेंद्र धाकरे पर उसी पीड़िता से रेप करने का आरोप लगा है। पुलिस ने आरोपी वकील को गिरफ्तार कर शनिवार को जेल भेज दिया है।

मामला जितना भयावह है, उतना ही पीड़िता के लिए दर्दनाक भी। औरैया की रहने वाली यह महिला वर्ष 2022 में एत्मादपुर क्षेत्र में हुए एक गैंगरेप की शिकार थी। उस घटना के बाद उसने न्याय की उम्मीद में अधिवक्ता जितेंद्र धाकरे उर्फ संतोष सिंह को अपना केस सौंपा था। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि वकील ने उसकी मजबूरी और भरोसे का फायदा उठाकर उसके साथ धोखेबाजी की।

पीड़िता के मुताबिक, बीते गुरुवार को जब वह कोर्ट में अपने केस के सिलसिले में पहुंची, तब अधिवक्ता ने उससे कहा कि "मामले में समझौते की बात चल रही है" और इस पर चर्चा करनी होगी। उसने पीड़िता को ताजगंज क्षेत्र के होटल ताज रॉयल में बुलाया और कमरा नंबर 106 में रुकने की व्यवस्था कर दी। वकील ने कहा कि वह थोड़ी देर में आकर पूरे मामले पर बातचीत करेगा। रात को जब पीड़िता होटल के कमरे में थी, तभी आरोपी वकील वहां पहुंचा और बात करने के बहाने कमरे में दाखिल हुआ। इसके बाद उसने जबरन उसके साथ दुष्कर्म किया। पीड़िता ने बताया कि उसने विरोध किया, लेकिन आरोपी ने धमकाकर उसे चुप रहने को कहा। घटना के बाद वह सदमे में थी और किसी तरह साहस जुटाकर अगले दिन थाना एकता पहुंची। थाने पहुंचकर उसने पूरी घटना की जानकारी पुलिस अधिकारियों को दी। उसकी शिकायत के आधार पर आरोपी अधिवक्ता जितेंद्र धाकरे के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 376 (दुष्कर्म) के तहत मामला दर्ज किया गया।

एसीपी पीयूष कांत राय ने बताया कि "पीड़िता की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर शुक्रवार शाम आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया। शनिवार को उसे न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है। मामले की जांच जारी है और होटल से आवश्यक साक्ष्य जुटाए जा रहे हैं।" इस पूरे घटनाक्रम ने कानूनी जगत में भी सनसनी फैला दी है। एक तरफ न्याय की उम्मीद में अदालत के दरवाज़े खटखटाने वाली महिला अब खुद उसी सिस्टम से धोखा खा गई, तो दूसरी ओर इस घटना ने यह भी सवाल खड़े कर दिए हैं कि जब रक्षक ही भक्षक बन जाए, तो एक पीड़ित महिला न्याय के लिए किस पर भरोसा करे।

स्थानीय महिला संगठनों और समाजसेवी संस्थाओं ने इस घटना की कड़ी निंदा की है और मांग की है कि आरोपी वकील की लाइसेंस तुरंत रद्द कर कड़ी से कड़ी सजा दी जाए, ताकि कोई भी व्यक्ति किसी महिला की मजबूरी और न्याय की लड़ाई का इस तरह फायदा न उठा सके। न्याय की राह अब इस पीड़िता के लिए पहले से कहीं ज़्यादा कठिन हो चुकी है, लेकिन उसकी आवाज़ ने एक बार फिर यह सवाल गूंजा दिया है — क्या इस देश में एक महिला को न्याय के लिए भरोसा करने के लिए अब किसी का सहारा भी नहीं बचा?

## गाजीपुर में मासूम की दर्दनाक मौत: खेलते-खेलते इलेक्ट्रिक धान कुटनी मशीन में फंसा 6 साल का बच्चा, पूरे गांव में पसरा मातम

**(जीएनएस)।** गाजीपुर जिले के प्यारेपट्टी गांव में रविवार की दोपहर एक ऐसी दर्दनाक घटना घटी जिसने पूरे गांव को सदमे में डाल दिया। छह वर्षीय नखड़ू पुत्र नंदलाल, जो अभी जीवन की पहली सीढ़ियों पर था, खेलते-खेलते ऐसी मशीन का शिकार हो गया जो उसके घर की रोजमर्रा की जरूरत का हिस्सा थी। घर में रखी इलेक्ट्रिक धान कुटनी मशीन उसके लिए मौत का जाल बन गई। दोपहर लगभग दो बजे नखड़ू घर में अकेला था। उसके माता-पिता खेतों में काम पर गए थे और बड़े भाई पड़ोस में खेल रहे थे। खेल-खेल में उसका हाथ मशीन के स्विच पर पड़ गया और पलक झपकते ही मशीन चालू हो गई। तेज़ी से घूमती बेल्ट में उसका हाथ फंस गया और देखते ही देखते वह पूरी तरह उसमें समा गया।

मासूम की चीख सुनकर पड़ोसी दौड़ पड़े। किसी ने बिजली का स्विच बंद किया, तो किसी ने बच्चे को मशीन से निकालने की कोशिश की, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। नखड़ू बेहोश पड़ा था, शरीर पर गंभीर चोटों के निशान थे। लोगों ने तुरंत उसे सैदपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया, लेकिन डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। यह सुनते ही अस्पताल में मातम छा गया। मां प्रियंका देवी अपने बच्चे का शव सीने से लगाकर रोती रही। पिता नंदलाल, जो एक मेहनती किसान हैं, स्तब्ध होकर वहीं बैठ गए। छोटे से गांव में हर किसी की आंखें नम थीं। गांव के लोगों ने बताया कि नखड़ू तीन भाइयों में सबसे छोटा था और परिवार का लाडला भी। उसकी शरारतें पूरे घर को मुस्कुराने पर मजबूर कर देती थीं। कोई सोच भी नहीं सकता था कि वही बच्चा कुछ ही पलों में इस दुनिया से चला जाएगा। गांव में जब यह खबर फैली तो पूरा माहौल गमगीन हो गया। बच्चे के दोस्त, रिश्तेदार और पड़ोसी सभी शोक में डूब गए।

परिवार ने इस घटना की सूचना पुलिस को नहीं दी और अपने स्तर पर ही अंतिम संस्कार की तैयारी शुरू कर दी। ग्रामीणों के अनुसार, जिस मशीन से यह हादसा हुआ वह धान कुटने के लिए इस्तेमाल की जाती है और घर के आंगन में ही रखी थी। बच्चे ने पहले भी उसे घूमते देखा था, शायद जिज्ञासा में उसने स्विच दबा दिया और यही उसकी जान ले बैठा।

गांव के बुजुर्गों ने कहा कि यह घटना लापरवाही का बड़ा सबक है। घर में रखी इलेक्ट्रिक या मोटर मशीनें बच्चों के लिए खतरा बन सकती हैं। बच्चों के आसपास ऐसे उपकरणों को चालू स्थिति में रखना जानलेवा साबित हो सकता है। प्यारेपट्टी गांव के लोग अब यह संकल्प ले रहे हैं कि ऐसी मशीनें घर में नहीं रखेंगे, ताकि फिर किसी और के घर से मासूम की किलकारी न छिन जाए।

नखड़ू की मौत ने न सिर्फ एक परिवार को उजाड़ दिया, बल्कि पूरे गांव को हिला दिया। हर घर में इस बात की चर्चा है कि सुरक्षा के अभाव में कितनी बड़ी त्रासदियां जन्म ले सकती हैं। यह घटना केवल एक हादसा नहीं, बल्कि एक चेतावनी बनकर सामने आई है कि आधुनिक साधनों के बीच सावधानी की कमी कैसे जीवन को मौत में बदल सकती है।

## पुणे लैंड डील विवाद पर शरद पवार बोले — "जनता को बताओ सच", पार्थ पवार पर लगे आरोपों से उठी राजनीतिक भूचाल

**(जीएनएस)।** नई दिल्ली। महाराष्ट्र की राजनीति में भूचाल मचा देने वाले पुणे लैंड डील विवाद पर आखिरकार राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी - शरदचंद्र पवार गुट) के प्रमुख शरद पवार ने चुप्पी तोड़ दी है। अपने पोते पार्थ पवार का नाम इस विवाद में सामने आने के बाद उन्होंने कहा कि मामले की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए और जो भी सच्चाई है, उसे जनता के सामने रखा जाना चाहिए।

शरद पवार ने कहा, "मुख्यमंत्री ने खुद कहा है कि मामला गंभीर है, तो उन्हें जांच कराकर पूरी सच्चाई लोगों को बतानी चाहिए। यदि कोई गलती हुई है, तो कानून को अपना काम करने दीजिए। देश में जनता सर्वोच्च है, इसलिए उसे सच जानने का अधिकार है।" उनके इस बयान के बाद महाराष्ट्र के राजनीतिक गलियारों में एक नई हलचल मच गई है।

यह विवाद तब तूल पकड़ गया जब उपमुख्यमंत्री अजित पवार के बेटे पार्थ पवार पर पुणे में एक सरकारी जमीन को सस्ते दाम पर खरीदने के आरोप लगे। रिपोर्टों के मुताबिक, पुणे के बाहरी इलाके में स्थित 43 एकड़ जमीन, जिसकी बाजार कीमत लगभग 1800 करोड़ रुपये आंकी गई थी, उसे मात्र 300 करोड़ रुपये में खरीदा गया। यह जमीन "वतनश्रेणी" श्रेणी की थी, जिसे कानूनी रूप से बिना सरकारी अनुमति के बेचा नहीं जा सकता।

आरोपों के अनुसार, इस सौदे के दो दिन बाद ही स्टांप ड्यूटी माफ करने का आदेश जारी हुआ और संबंधित कंपनी ने केवल 500 रुपये की स्टांप ड्यूटी भरकर रजिस्ट्रेशन करा लिया। इस पूरी प्रक्रिया पर सवाल उठते ही विपक्ष ने राज्य सरकार पर हमला तेज कर दिया।

शरद पवार ने हालांकि कहा कि उनका परिवार राजनीतिक विचारों में भले ही अलग हो, लेकिन व्यक्तिगत रूप से एकजुट है। उन्होंने कहा, "मेरे पोते ने अजित पवार के खिलाफ चुनाव लड़ा था और अजित पवार की पत्नी ने सुप्रिया सुले के खिलाफ, लेकिन यह सब राजनीतिक प्रतिस्पर्धा थी। पारिवारिक रिश्ते आज भी वैसे ही मजबूत हैं।"



विपक्षी दलों ने इस सौदे को लेकर कई सवाल उठाए हैं। शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) के नेता अंबादास दानवे, कांग्रेस के विजय वडेट्टीवार और हर्षवर्धन सापकाल ने कहा कि दो एफआईआर दर्ज होने के बावजूद पार्थ पवार का नाम क्यों छोड़ा गया। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भी इस मुद्दे को संसद और सोशल मीडिया पर उठाते हुए इसे "जमीन चोरी और वोट चोरी" से जोड़ दिया।

इस बीच अजित पवार ने खुद मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से मुलाकात कर सफाई दी कि पार्थ पवार और उनके पार्टनर दिग्विजय पाटिल को यह जानकारी नहीं थी कि यह जमीन सरकारी श्रेणी की है। उन्होंने कहा, "यह जमीन सरकारी थी, जिसे बेचा नहीं जा सकता। पार्थ और उनके साथी को इस बात की जानकारी नहीं थी। जांच में सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा कि रजिस्ट्रेशन कैसे हुआ और किसकी गलती थी।" अजित पवार ने यह भी कहा कि न तो उन्होंने और न ही उनके कार्यालय ने इस सौदे में किसी से संपर्क किया या कोई दबाव डाला। "न कोई भुगतान हुआ, न कब्जा लिया गया। यह सौदा अधूरा है," उन्होंने कहा।

वहीं शरद पवार के दूसरे पोते और एनसीपी विधायक रोहित पवार, जो अक्सर सरकार पर तीखे हमले करते हैं, इस मुद्दे पर अब तक चुप हैं। इस पर मंत्री संजय शिरसाट ने सोशल मीडिया पर व्यंग्य किया — "हमारा प्यारा तोता आज चुप क्यों है?" महाराष्ट्र की राजनीति में यह विवाद केवल एक जमीन सौदे तक सीमित नहीं रहा। इसने सत्ता गठबंधन, पारिवारिक रिश्तों और नैतिक जिम्मेदारियों पर एक व्यापक बहस छेड़ दी है। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का कहना है कि आने वाले दिनों में यह मामला राज्य की सियासत का केंद्र बिंदु बनेगा, क्योंकि इसमें सत्ता, परिवार और भ्रष्टाचार तीनों के ताने-बाने उलझे हुए हैं। फिलहाल सबकी नजरें राज्य सरकार की जांच रिपोर्ट पर हैं — क्या यह "वतनश्रेणी जमीन" का सौदा एक प्रशासनिक भूल थी, या फिर इसमें सत्ता के प्रभाव की गूंज छिपी हुई है, यह आने वाले दिनों में साफ होगा।

## पालीताना बना दुनिया का पहला शहर जहां नॉनवेज पर पूरी तरह से प्रतिबंध, अब सिर्फ शुद्ध शाकाहारी भोजन की अनुमति

**(जीएनएस)।** गुजरात के भावनगर जिले में स्थित पालीताना शहर ने इतिहास रच दिया है। यह दुनिया का पहला ऐसा शहर बन गया है जहां अब मटन, चिकन ही नहीं बल्कि अंडे की बिक्री और सेवन तक पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया गया है। सरकार के इस फैसले के बाद पालीताना पूरी तरह से 'शुद्ध शाकाहारी शहर' बन गया है। यह कदम जैन मुनियों के वर्षों से चल रहे संघर्ष और अहिंसा के सिद्धांतों की विजय के रूप में देखा जा रहा है।

पालीताना जैन धर्म के अनुयायियों के लिए सबसे पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक है। शत्रुंजय पर्वत पर बने 900 से अधिक संगमरमर के मंदिर इस क्षेत्र की धार्मिक महत्ता को दर्शाते हैं। देश-विदेश से हजारों जैन श्रद्धालु हर वर्ष यहां दर्शन के लिए आते हैं। इस पवित्र नगरी में जीव हत्या और मांसाहार लंबे समय से विवाद का विषय रहा था, जिसे लेकर जैन मुनियों ने कई बार आंदोलन किए।



2014 में करीब 200 से अधिक जैन मुनियों ने पालीताना में 250 से अधिक घंटे की भूख हड़ताल की थी। उनका कहना था कि जिस नगर में भगवान महावीर और अन्य तीर्थंकरों की उपासना होती है, वहां किसी भी प्रकार की जीव हत्या नहीं होनी चाहिए। मुनियों की इस मांग को व्यापक समर्थन मिला और अंततः सरकार को यह निर्णय लेना पड़ा कि शहर में मांस, मछली, अंडा और पशु-वध की किसी भी गतिविधि को पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दिया जाए।

सरकार के आदेश के अनुसार पालीताना में न केवल कसाईखाने और मीट की दुकानें बंद की गई हैं, बल्कि अंडे की बिक्री भी प्रतिबंधित कर दी गई है। इसके उल्लंघन पर सख्त कार्रवाई और दंड का प्रावधान भी रखा गया है। इस फैसले के बाद पालीताना की पहचान अब 'शुद्ध शाकाहारी नगरी' के रूप में हो गई है।

जैन समाज ने इस कदम का स्वागत करते हुए इसे अहिंसा और करुणा की विजय बताया है। उनका कहना है कि यह निर्णय न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से बल्कि पर्यावरण और स्वास्थ्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। पालीताना में अब पूरी तरह से शाकाहारी रेस्टोरेंट और भोजनालय खुल गए हैं, जहां देशभर से आने वाले श्रद्धालु और पर्यटक विविध स्वादिष्ट शाकाहारी व्यंजनों का आनंद ले सकते हैं।

हालांकि, इस फैसले को लेकर कुछ विरोधी आवाजें भी उठी हैं। कुछ समूहों का कहना है कि यह भोजन की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने जैसा है और इससे पर्यटन उद्योग पर असर पड़ सकता है, क्योंकि बहुत से पर्यटक मांसाहारी भोजन पसंद करते हैं। उनका यह भी कहना है कि किसी धर्म विशेष की भावनाओं के अनुरूप पूरे शहर पर यह प्रतिबंध थोपना व्यक्तिगत स्वतंत्रता के विरुद्ध है।

राजनीतिक दृष्टि से देखा जाए तो भावनगर जिले का यह क्षेत्र हमेशा से भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) का गढ़ रहा है। 2002 में पालीताना को विधानसभा क्षेत्र का दर्जा मिला था और तब से अब तक केवल 2012 को छोड़कर यहां बीजेपी को लगातार जीत मिलती रही है। 2002 में यहां से केंद्रीय मंत्री मनसुख मांडविया भी विधायक रह चुके हैं।

पालीताना न केवल धार्मिक बल्कि वास्तुकला और आध्यात्मिक दृष्टि से भी अद्वितीय स्थान रखता है। शत्रुंजय पर्वत पर बने जैन मंदिरों का समूह दुनिया में संगमरमर से निर्मित सबसे विशाल और अनूठा परिसर माना जाता है। यहां की पहाड़ियों पर सुबह-सुबह घंटियों की गूंज और श्रद्धालुओं की प्रार्थना वातावरण को आध्यात्मिक बना देती है।

अब जब इस नगर में नॉनवेज पर पूर्ण प्रतिबंध लागू हो गया है, पालीताना जैन धर्म की उस भावना का प्रतीक बन गया है जो 'अहिंसा परमो धर्मः' के सिद्धांत पर आधारित है। यह निर्णय केवल एक धार्मिक कदम नहीं, बल्कि यह संदेश भी देता है कि जब समाज सामूहिक रूप से किसी विचारधारा को अपनाता है, तो वह पूरी दुनिया के लिए एक नई मिसाल बन सकता है।

## दिल्ली-एनसीआर में सांसों पर संकट, हवा जहरीली और हालत गंभीर; आज इंडिया गेट पर प्रदूषण के खिलाफ जुटेंगे लोग

**(जीएनएस)।** नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली और आसपास का इलाका एक बार फिर गैस चैंबर में तब्दील हो गया है। हवा में जहर इस कदर घुल चुका है कि लोगों का सांस लेना मुश्किल हो गया है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के ताज़ा आंकड़ों के मुताबिक, रविवार सुबह दिल्ली-एनसीआर के अधिकांश इलाकों में हवा की गुणवत्ता 'गंभीर श्रेणी' में पहुंच गई है।

दिल्ली का औसत एयर क्वालिटी इंडेक्स (AQI) 391 दर्ज किया गया है, जबकि कई इलाकों में यह 400 से भी ऊपर पहुंच गया। आनंद विहार में 412, अलीपुर में 415, अशोक विहार में 416, चांदनी चौक में 409, द्वारका में 383, आईटीओ में 420, एम्स के पास 421 और जहांगीरपुरी में तो 433 तक पहुंच गया — जो 'गंभीर से भी अधिक' श्रेणी में आता है।

### एनसीआर में भी हालात चिंताजनक

दिल्ली की सीमाओं से सटे शहरों की स्थिति भी बेहतर नहीं है। गाजियाबाद के वसुंधरा में AQI 421, नोएडा सेक्टर-62 में 410, गुरुग्राम सेक्टर-51 में 260 और फरीदाबाद सेक्टर-11 में 275 दर्ज किया गया। इससे पहले शनिवार को दिल्ली देश का दूसरा सबसे प्रदूषित शहर रहा, जबकि रोहतक की हवा सबसे खराब दर्ज की गई।



### सड़कों पर दिखा विरोध का जोश

दिल्ली की इस बिगड़ती हालत के खिलाफ अब जनता खुद मैदान में उतर रही है। 'वारियर माम्स' और 'माय राइट टू ब्रीद' जैसे नागरिक समूहों ने आज यानी रविवार को इंडिया गेट पर शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन की घोषणा की है। सोशल मीडिया पर #HelpUsBreathe और #RightToBreathe जैसे हैशटैग के साथ यह मुहिम तेजी से फैल रही है।

लोगों का कहना है कि अब "बेशक सांस नहीं मगर लड़ने का साहस सही", "प्रदूषण से मचा है हाहाकार, निदान करो सरकार", "बच्चे, बूढ़े और जवां सबको चाहिए साफ हवा" जैसे नारों के साथ दिल्ली के लोग अपनी आवाज सरकार तक पहुंचाएंगे।

हालांकि, दिल्ली पुलिस ने इस प्रदर्शन के लिए औपचारिक अनुमति नहीं दी है, लेकिन आयोजकों का कहना है कि यह किसी राजनीतिक दल का नहीं बल्कि नागरिकों का आंदोलन है। वे इसे शांतिपूर्ण और प्रतीकात्मक तरीके से करेंगे।

### जनता की बढ़ती चिंता

राजधानी में धुंध और धुएं की मोटी परत के कारण दृश्यता कम हो गई है। अस्पतालों में सांस संबंधी बीमारियों के मरीजों की संख्या बढ़ी है। डॉक्टरों का कहना है कि यह प्रदूषण बच्चों, बुजुर्गों और गर्भवती महिलाओं के लिए विशेष रूप से खतरनाक है। सफदरजंग अस्पताल के श्वसन रोग विशेषज्ञों के अनुसार, लगातार उच्च स्तर का AQI रहने से फेफड़ों में संक्रमण, दमा के दौरे, सिरदर्द, आंखों में जलन और नींद की कमी जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं।

### विशेषज्ञों की चेतावनी और मांगें

पर्यावरण विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि अगर तुरंत कठोर कदम नहीं उठाए गए तो दिल्ली में स्थिति और भयावह हो सकती है। वे मांग कर रहे हैं कि सरकार स्कूलों में छुट्टियां, निर्माण कार्यों पर रोक, डिज़ल वाहनों की आवाजाही पर सीमित प्रतिबंध और स्वास्थ्य परामर्श (हेल्थ एडवाइजरी) जैसी तत्काल घोषणाएं करे।

## गुजरात में दर्दनाक घटना : तीन पेट्रोल पंपों के मालिक ने दो छोटी बेटियों संग किया सुसाइड, नर्मदा कैनाल से मिली लाशें, पूरे राज्य में पसरा मातम

**(जीएनएस)।** गुजरात के गांधीनगर जिले से आई एक खबर ने पूरे प्रदेश को हिला दिया है। कलोल क्षेत्र के बोरिसाना गांव में रहने वाले धीरज भाई भालाभाई रबारी, जो तीन पेट्रोल पंपों के मालिक बताए जा रहे हैं, ने अपनी दो मासूम बेटियों के साथ आत्महत्या कर ली। शुक्रवार सुबह से लापता धीरज भाई और उनकी बेटियों की लाशें शनिवार को नर्मदा कैनाल से बरामद हुईं। घटना ने पूरे रबारी समाज को गहरे शोक में डुबो दिया है। मामले की शुरुआत गुरुवार सुबह तब हुई जब धीरज भाई ने अपने परिवार को बताया कि वे अपनी दोनों बेटियों के आधार कार्ड अपडेट करवाने के लिए बाहर जा रहे हैं। सामान्य दिन की तरह वह घर से निकले, लेकिन देर शाम तक जब वे घर नहीं लौटे तो परिवारवालों की चिंता बढ़ गई। फोन लगातार बंद आने पर रिश्तेदारों और परिचितों ने खोजबीन शुरू की। देर रात पुलिस को सूचना दी गई और तलाश अभियान चलाया गया। खोजबीन के दौरान पुलिस को नर्मदा कैनाल के पास धीरज भाई की कार खड़ी मिली। जब तलाशी ली गई तो कैनाल में तीनों के शव तैरते हुए मिले। पुलिस ने तुरंत शवों को बाहर निकलवाया और पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।

धीरज भाई स्थानीय स्तर पर एक प्रतिष्ठित कारोबारी के रूप में जाने जाते थे। उनके पास गांधीनगर क्षेत्र में तीन पेट्रोल पंप थे और वे सामाजिक रूप से भी सक्रिय व्यक्ति माने जाते थे। इसलिए जब यह खबर सामने आई तो पूरे इलाके में सन्नाटा छा गया। ग्रामीणों और परिचितों को विश्वास नहीं हो रहा था कि इतना खुशमिजाज और स्थिर व्यक्ति ऐसा कदम उठा सकता है।



प्रारंभिक जांच में आत्महत्या का मामला बताया जा रहा है, हालांकि पुलिस अब भी हर एंगल से जांच कर रही है। आर्थिक तनाव, पारिवारिक कलह या मानसिक अवसाद—इन सभी संभावनाओं पर पुलिस टीम काम कर रही है। सांतेज थाने की पुलिस ने बताया कि परिवार और दोस्तों से पूछताछ की जा रही है ताकि यह पता लगाया जा सके कि धीरज भाई ने ऐसा क्यों किया।

स्थानीय सूत्रों के अनुसार, धीरज भाई पिछले कुछ समय से मानसिक रूप से परेशान दिख रहे थे। वे कम बोलने लगे थे और अक्सर अकेले बैठते थे। हालांकि परिवार को कभी यह अंदेशा नहीं था कि वे अपनी दोनों मासूम बेटियों के साथ इतना बड़ा कदम उठा लेंगे। इस घटना ने न केवल उनके परिवार बल्कि पूरे समुदाय को सदमे में डाल दिया है।

रबारी समाज के लोगों ने परिवार के प्रति गहरा शोक व्यक्त किया है। गांव में माहौल बेहद दुखद है और हर कोई यही सवाल पूछ रहा है कि आखिर क्या मजबूरी रही होगी कि एक पिता ने अपनी जान तो दी ही, साथ में अपनी बेटियों का भविष्य भी खत्म कर दिया।

पुलिस ने शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है और फिलहाल रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है। घटना के बाद पुलिस प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि यदि कोई भी व्यक्ति जीवन से निराश है या आत्महत्या का विचार मन में आता है, तो तुरंत किसी मनोचिकित्सक या हेल्पलाइन से संपर्क करें।

अगर कभी आपको जीवन में ऐसा लगे कि सब कुछ खत्म हो गया है, तो याद रखें कि मदद हमेशा आपके पास है। आत्महत्या किसी समस्या का समाधान नहीं, बल्कि और अधिक दुख छोड़ जाती है। बात करें, साझा करें, और मदद लें।

मानसिक स्वास्थ्य सहायता के लिए उपलब्ध हेल्पलाइन नंबरः

राष्ट्रीय हेल्पलाइन – 14416 (24 घंटे, 7 दिन)

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय – 1800-599-0019 (13 भाषाओं में सेवा)

इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन बिहेवियर एंड एलाइड साइंसेज – 9868396824 / 9868396841 / 011-22574820

हितगुज हेल्पलाइन, मुंबई – 022-24131212

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंसेज (NIMHANS) – 080-26995000

जीवन सबसे बड़ा उपहार है। यदि आप या आपके आस-पास कोई व्यक्ति निराशा में डूबा है, तो उसके साथ खड़े रहें — क्योंकि एक छोटी-सी बात, एक सुनने वाला कान और एक भरोसा किसी की जान बचा सकता है।

## गोंडा में प्रेम और पीड़ा की दर्दनाक दास्तां : पत्नी की खुदकुशी के सदमे में पति ने भी दी जान, सात दिन बाद दोहराया वही मंजर

**(जीएनएस)।** गोंडा। उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले में एक ऐसा हृदयविदारक मामला सामने आया है जिसने पूरे इलाके को स्तब्ध कर दिया है। धानेपुर थाना क्षेत्र के बनगाई गांव में पत्नी की आत्महत्या से टूटे एक युवक ने सात दिन बाद उसी तरह अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली। इस घटना ने न केवल परिवार बल्कि पूरे गांव को शोक में डुबो दिया है। गांव में मातम पसरा है और हर कोई इस दंपती की असमय मौत पर अविश्वास और दुःख में डूबा हुआ है। घटना के अनुसार मृतक युवक शिवम सिंह (30 वर्ष) अपनी पत्नी वंदना सिंह की मौत के बाद से गहरे सदमे में था। पत्नी ने 30 अक्टूबर को फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी, जिसके बाद से शिवम पूरी तरह टूट गया था। परिजनों के अनुसार, वह पिछले सात दिनों से अवसाद में था, न किसी से बातचीत करता था, न ही कहीं आना-जाना। वह घंटों अपने कमरे में चुपचाप बैठा रहता और अक्सर वंदना की तस्वीरों को देखता रहता था। परिवार के लोगों ने कई बार उसे समझाने की कोशिश की, परंतु उसकी खामोशी टूटने का नाम नहीं ले रही थी।

शनिवार को जब घर के सदस्य किसी काम से बाहर गए हुए थे, तब शिवम ने अपने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर लिया।



काफी देर तक जब वह बाहर नहीं आया, तो परिजनों ने दरवाजा तोड़ा तो देखा कि वह पंखे के हुक से रस्सी के सहारे लटक रहा था। यह दृश्य देखकर परिवार वालों के पैरों तले जमीन खिसक गई। मृतक की मां कोकिला सिंह ने तुरंत थाना धानेपुर पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को नीचे उतरवाया और पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

मां कोकिला और परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। मां बार-बार बेहोश हो रही हैं। गांव के लोग बताते हैं कि शिवम और वंदना का रिश्ता बेहद प्रेमपूर्ण था। दोनों की शादी को दो साल हुए थे और दोनों एक-दूसरे से बेहद प्यार करते थे। लेकिन किसी अज्ञात कारण से वंदना ने अचानक आत्महत्या कर ली थी, जिससे शिवम टूट गया था। गांव के लोगों का कहना है कि पत्नी की मौत के बाद शिवम का व्यवहार पूरी तरह बदल गया था। वह न खाना खाता था, न किसी से बात करता था। अक्सर अकेले बैठा रहता और कहता कि "वंदना के बिना अब कुछ नहीं बचा।"

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि प्रारंभिक जांच में मामला आत्महत्या का ही प्रतीत होता है। घटनास्थल से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। पुलिस का कहना है कि फिलहाल किसी साजिश या विवाद के संकेत नहीं मिले हैं। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

पड़ोसियों का कहना है कि दोनों पति-पत्नी बहुत ही मिलनसार और शांत स्वभाव के थे। उनकी किसी से दुश्मनी नहीं थी। लेकिन पत्नी की अचानक आत्महत्या ने परिवार और पति दोनों को झकझोर दिया। शिवम की आत्महत्या के बाद अब पूरा गांव इस बात पर चर्चा कर रहा है कि कैसे मानसिक अवसाद किसी व्यक्ति को अंदर से खत्म कर देता है।

यह घटना समाज के लिए एक गहरी सीख छोड़ती है — कि मानसिक तनाव और अवसाद के संकेतों को कभी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। अगर समय रहते परिवार या मित्र किसी व्यक्ति के भीतर छिपे दर्द को समझ पाएं, तो शायद ऐसी त्रासदियां रोकी जा सकती हैं। गोंडा की यह घटना न केवल एक परिवार की व्यक्तिगत त्रासदी है, बल्कि यह उस चुप्पी की गूंज भी है जो अक्सर अवसाद में डूबे लोगों के भीतर पलती रहती है और अंततः उन्हें जीवन से दूर कर देती है।

फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी है, लेकिन बनगाई गांव में सन्नाटा पसरा हुआ है। जहां कभी शिवम और वंदना की हंसी गूंजती थी, अब वहां सिर्फ शोक की निस्तब्धता है। गांव के बुजुर्ग कहते हैं — "इन दोनों की जोड़ी स्वर्ग में भी साथ रहे, यही दुआ है।"